हंसती दुनिया
वर्ष 46
अंक 2
फरवरी 2019
₹15/-

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 2 • फरवरी 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**

सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. कभी न भूलो
16. समाचार
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

विशेष/लेख

7. बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन
8. याददाश्त का अजूबा केन्द्र : कमल सौगानी
21. प्लास्टिक की खोज : राधेलाल 'नवचक्र'
26. जैकाना : जयेन्द्र
30. अजब-गजब झरने : किरण बाला
33. गिलहरी : कैलाश जैन
42. पेंगुइन का अनोखा संसार : दीपांशु जैन

कविताएं

9. सीखो, सुबह-सवेरे : कीर्ति श्रीवास्तव
17. रंग-बिरंगे फूल : हरजीत निषाद
23. मानव और स्वास्थ्य : डॉ. परशुराम शुक्ल
29. ऋतुराज का आगमन : मीरा सिंह 'मीरा'
29. वासंती चर्चे : डॉ. हरीश निगम
47. दो बाल कविताएं : कमल सिंह चौहान

कहानियां

10. संगति का प्रभाव : परशुराम संबल
19. अपनी कमाई : रामफल
24. सन्त की बात : कमल सौगानी
27. मेहनत की कमाई : राजेन्द्र परदेसी
39. नन्हा बरस गया : ओमप्रकाश क्षत्रिय

शिक्षा का मूल्य पहचानें

प्राय: यह देखा गया है कि बच्चे, विद्यार्थी एवं बड़े लोग बात करते समय या अपनी बात को समझाते समय कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनका बातचीत में कोई अर्थ नहीं होता। ऐसे शब्द जिनको अमर्यादित शब्द भी कह सकते हैं। यह बात शत-प्रतिशत ठीक है कि बच्चे इस तरह की भाषा पैदा होने से पहले सीख कर नहीं आए थे। न तो उन्हें बोलना आता था, न चलना और न ही उन्हें किसी विषय की जानकारी थी। उन्होंने जो भी सीखा वह अपने-अपने माता-पिता, भाई-बहन, मित्र-बन्धु, विद्यालयों से जहाँ वे ज्ञान प्राप्त करने जाते हैं या अपने ही बड़े-बुजुर्गों से और जिस समाज में जी रहे हैं उन सभी से।

इन तथ्यों से हम सभी परिचित भी हैं। फिर भी यह समस्या बद से बदत्तर होती जा रही है और इसका निराकरण हर कोई चाहता है फिर भी निराकरण हो नहीं पाता। इसके लिए या तो हम दिल से चाहते ही नहीं और अगर चाहते भी हैं तो पूरा प्रयास नहीं करते। हमेशा हम दूसरे के ऊपर अपनी जिम्मेदारी छोड़ देते हैं कि पहले वह सुधरे फिर हम सुधरेंगे। इस तरह तो यह समस्या पहले से भी अधिक गंभीर और भयावह होती चली जाएगी। साथियों! यह विषय केवल विचारने का ही नहीं है इसका उपयुक्त समाधान भी आवश्यक है ताकि हम एक सुन्दर वातावरण तैयार करें जिसमें आने वाले समय में हमारे बच्चे, विद्यार्थी एक-दूसरे से सौहार्दपूर्ण तरीके से रह सकें। आने वाले समय में आज के बच्चे कल के नायक और जिम्मेदार एवं कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बन सकें।

हम सभी ने यह ध्यान रखना है कि बोलने से पहले सोचें कि हम क्या बोलने जा रहे हैं, क्या हमारे बोलने से सुनने वाले पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा? मैं सत्य तो बोल रहा हूँ परन्तु दूसरे को आहत करने वाली भाषा में तो नहीं बोल रहा; क्या मेरा बोलना उस समय सार्थक और समयानुकूल है या नहीं? क्या केवल बोलने भर से मेरी जिम्मेदारी पूर्ण हो जाती हैं? क्या मेरी भाषा में अमर्यादित शब्द का प्रयोग तो नहीं हो रहा? क्या जो मैं बोलने लगा हूँ वह दूसरे के लिए हितकारी है? या जो भी मैं कहूंगा अगर वह मेरे को कोई दूसरा कह देगा तो मुझे कैसा लगेगा? आदि-आदि। इन छोटी-छोटी बातों से अधिकतर हमारी रोज-रोज की छोटी-मोटी लड़ाई या झगड़े स्वत: ही समाप्त हो जाएंगे।

हमारे शिक्षक, माता-पिता और बुजुर्ग हमेशा हमें प्यार से बात करना सिखाते हैं और हमेशा हम बच्चों को जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ना देखना चाहते हैं। कई बार उनको डांट-डपट एवं कुछ ऊँचे स्वर में भी बच्चों को समझाने के लिए कहना पड़ता है परन्तु उनका उद्देश्य केवल बच्चों को ऊँचा उठाने का ही होता है। सभी विद्यार्थियों, बच्चों का कर्तव्य बनता है कि हम अपने गुरुजनों की शिक्षा को धारण करें, सुशिक्षा के मूल्य को पहचानें और जीवन को सार्थक करें।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 184

गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा एथे ओथे ढोई ना।
गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा इज्ज़त ते पत कोई ना।
गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा जमदा मरदा रहन्दा ए।
गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा हर दम दुखड़े सहन्दा ए।
गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा माया विच ग़ल्तान फिरे।
गुर तों बेमुख होवे जेहड़ा बणयां ओह शैतान फिरे।
गुर तों बेमुख होणा लोको इस तों वड्डा पाप नहीं।
जेकर सत्गुर दे हो रहिये रोग सोग संताप नहीं।
लख चुरासी कट के वी ओह बेमुख हुन्दा माफ़ नहीं।
अवतार गुरु दी शरन लए बिन लेखा हुन्दा साफ़ नहीं।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि गुरमुख गुरु की शरण में रहकर सदैव गुरु की ओर ही अपना मुख रखता है। वह कभी भी गुरु से बेमुख नहीं होता। हमेशा गुरु के हुक्म में रहकर जीवन जीता है। गुरमुख को पता होता है कि जो गुरु से विमुख हो जाता है, उसे यहाँ-वहाँ, लोक और परलोक में कहीं कोई जगह, कोई सहारा नहीं मिलता। गुरु से बेमुख इन्सान की कोई इज्जत-पत नहीं रहती। वह जन्मता है, मरता है और असहनीय दुख उठाता है। कोई भी उसकी मदद के लिए आगे नहीं आता। बेमुख का जीवन दुखों से भर जाता है। वह हमेशा दुख ही सहता रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी गुरु से विमुख हुए व्यक्ति की अवस्था का जिक्र करते हुए भक्तों को गुरु से विमुख होने से बचने की प्रेरणा देते हुए बता रहे हैं कि जो गुरु से बेमुख हो गया वह माया में गल्तान रहता है। माया के चक्कर से निकल पाना उसके लिए बहुत कठिन हो जाता है। वह मानव से देवता बनना तो दूर मानव से दानव बन जाता है। शैतानों वाले काम करके शैतान ही बन जाता है।

बाबा अवतार सिंह जी भक्तों को सजग करते हुए कह रहे हैं कि संसार में यूं तो माया के अनेकों कष्टदायी रूप हैं लेकिन गुरु से बेमुख होने से बड़ा कोई पाप-कर्म नहीं है। गुरु से बेमुख इन्सान चौरासी लाख योनियों में चक्कर काटकर भी बन्धन-मुक्त नहीं होता, उसे चौरासी के चक्कर से माफी नहीं मिलती।

बेमुख इन्सान की दुख और पीड़ा से मुक्ति का एकमात्र उपाय बताते हुए बाबा अवतार सिंह जी कहते हैं कि सद्गुरु की शरण लिए बिना चौरासी लाख योनियों में डालने वाला कर्म का लेखा साफ नहीं हो सकता। गुरु की शरण में आकर ही संसार के तमाम रोग-शोक, संताप नष्ट होते हैं। अन्य किसी भी उपाय से इन दुखों से छुटकारा नहीं मिलता।

सम्पूर्ण अवतार बाणी में विभिन्न स्थानों पर मानव के लिए स्पष्ट चेतावनी दी गई है ताकि मानव भूलकर भी भक्ति मार्ग से भटक न जाए, सद्गुरु से विमुख न हो जाए और भक्ति मार्ग पर चलकर गुरु-कृपा से आनन्दमय जीवन जी सके।

कभी न भूलो

संकलनकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

★ यदि हम भले हैं तो सारा संसार हमारे लिए भला है। – समर्थ रामदास

★ मनुष्य जितना ज्ञान में घुल जाता है। वह कर्म के रंग में उतना ही रंग जाता है।

★ सद्कर्म और अच्छे विचार ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाते हैं। – विनोबा भावे

★ जो अपने को सबसे बुद्धिमान समझता है, वह सामान्यत: सबसे बड़ा मूर्ख होता है। – कोल्टन

★ अहिंसा वास्तविक शक्ति का प्रतीक है। – डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

★ असम्भव एक शब्द है जो केवल मूर्खों के शब्दकोष में पाया जाता है। – नेपोलियन

★ अहंकार नशे का सबसे शक्तिशाली रूप है। – प्रेमचन्द

★ ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा दरवाजा दोबारा खटखटायेगा। – शैम्फोर्ट

★ बुद्धिमान मनुष्य को जितने अवसर मिलते हैं उनसे अधिक वह स्वयं बना लेता है। – बेकन

★ इच्छा से दु:ख आता है, इच्छा से भय आता है। जो इच्छाओं से मुक्त है, वह न दुख जानता है और न भय। – महात्मा बुद्ध

★ पवित्रता वह धन है जो प्रेम के बाहुल्य से पैदा होता है। – रवीन्दनाथ टैगोर

★ हम अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं और उसे 'होनी' कहते हैं।

★ कर्म भले सदा सुख न ला सके, किन्तु कर्म के बिना सुख नहीं मिलता। – डिजराइली

★ मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे बड़ी व्याख्या है। – लांग फैलो

★ जहाँ देह है वहाँ कर्म तो है ही, उससे कोई मुक्ति नहीं है तथापि शरीर को प्रभु मन्दिर बनाकर उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त करनी चाहिए। – महात्मा गाँधी

★ भगवान ने संसार को कर्म प्रधान बना रखा है। इसमें जो मनुष्य जैसा कर्म करता है उसको वैसा ही फल प्राप्त होता है। – गोस्वामी तुलसीदास

★ जीवन का एक क्षण करोड़ स्वर्ण मुद्राएं देने पर भी नहीं मिलता। – चाणक्य

★ जो दूसरों की भलाई करना चाहता है, उसने करने से पूर्व ही अपना भला कर दिया। – कन्फ्यूशियस

★ भलाई करना कर्तव्य नहीं आनन्द है क्योंकि वह तुम्हारे स्वास्थ्य और सुख की वृद्धि करता है।

★ पाप न करना ही दुनिया की भलाई करना है। – दयानन्द सरस्वती

★ भलाई जितनी अधिक की जाती है उतनी ही अधिक फैलती है। – मिल्टन

बाबा हरदेव सिंह जी के दिव्य वचन

★ महान वही है जो महान गुरुओं, अवतारों के आदेशों को अपने जीवन में ढालता है। उन महापुरुषों की महानता का केवल वर्णन करने से कोई महान नहीं बन सकता। वे हमारे महापुरुष महान तो थे ही वे हमारी ज्यादा महिमा गाने से ज्यादा महान या कम महिमा गाने से कम महान नहीं हो जायेंगे। हमें उनके आदेशों पर चलकर स्वयं महान बनना है।

★ परमपिता परमात्मा को जानकर ही विश्व शान्ति सम्भव है। महापुरुषों, गुरुओं, अवतारों के पदचिन्हों पर चलकर ही कल्याण सम्भव है। मानवता को अध्यात्मिकता से ही बचाया जा सकता है।

★ भक्त हर हाल में दातार के रंग में रहता है, उतार-चढ़ाव का असर ग्रहण नहीं करता बल्कि हर हाल में खुश रहता है।

★ तलवार के जख्म भर जाते हैं परन्तु जुबान के द्वारा कहे गये वचन दिलों को छलनी कर देते हैं।

★ एक बोल संवारने वाले और एक बिगाड़ने वाले होते हैं लेकिन कर्म का स्थान बोलों से भी ऊँचा है।

★ अहंकार अगर ऋषि-मुनियों को भी आ जाये तब भी वह पतन का ही कारण बनता है।

★ हमेशा अच्छों का संग करें। पवन का संग पाकर पांव के नीचे रौंदी जा रही धूल भी आसमान को छू लेती है।

★ अज्ञानता के अंधकार में रहकर तय किया गया जीवन सफर, धरती पर बोझ के समान है।

★ घृणा-वैर, लोभ-लालच मन के रोग हैं। प्रेम, करुणा, दया आने पर ये रोग चले जाते हैं।

★ हम केवल मानव का तन लिये ही न फिरें बल्कि मानवीय गुणों से युक्त भी हों।

★ प्रभु स्तुति में लगी वाणी तथा प्रेम और सत्य की तरफ से हटकर जो कुछ भी बोला जा रहा है महापुरुषों ने उसे बकबक कहा है।

★ सन्तों की ऊँची मत ले लो जीवन की चाल सुन्दर हो जायेगी।

★ ठीक सुनकर मानना और उसके अनुसार चलना आ जाये तो वाकई हम लाभान्वित होते हैं।

★ आज इन्सान सत्य की तरफ नहीं, झूठ की तरफ जाग्रत है। इसका मानवता की ओर जाग्रत होना बहुत जरूरी है।

★ अंधेरा रोशनी से ही मिटता है किसी और प्रयत्न से नहीं। इसी तरह बंधनों से निजात परमात्मा को जानकार ही मिलती है।

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

विज्ञान लेख : कमल सौगानी

याददाश्त का अजूबा केन्द्र

आज दुनिया के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रांति ला दी है। कम्प्यूटर की बदौलत कई जटिल कार्य बड़े आसान भी हुए हैं।

यह एक अचरज की बात है कि कम्प्यूटर जटिल से जटिल कार्य को भी तुरन्त हल कर देता है। जबकि मानव उस कार्य को अपने मस्तिष्क से करने में कितना ही समय बर्बाद कर देता है। हाँ, आश्चर्य तो तब होता है जब मानव के मस्तिष्क द्वारा बनाया कम्प्यूटर ही मानव को 'सोच' की दुनिया में पीछे धकेल देता है, खैर...

वैसे कम्प्यूटर के विकास की दास्तान साठ वर्ष पुरानी है। दुनिया का पहला कम्प्यूटर सन् 1944 में हारवर्ड यूनिवर्सिटी अमरीका में बनाया गया था। इसका सम्पूर्ण विकास सर ऐकन ने किया था। हाँ, इसके निर्माण विकास में इंटरनेशनल बिजनेस मशीन कॉरपोरेशन का भी पूरा-पूरा सहयोग था।

दुनिया के पहले कम्प्यूटर का नाम 'एनिएक' ही रखा गया था। इसके बाद जो कम्प्यूटर बना उसे 'हारवर्ड आइकेन मार्क-I' का नाम दिया गया।

हाँ, इन दो कम्प्यूटरों की लोकप्रियता को देखते हुए कई प्रकार के कम्प्यूटरों का विकास हुआ।

कम्प्यूटर के संदर्भ में एक दिलचस्प तथ्य है– कम्प्यूटर हमारे ही मस्तिष्क की उपज है, लेकिन कम्प्यूटर हमारे मस्तिष्क की अपेक्षा गणनाएं इतनी तेजी से कर सकता है, जो हम कभी सोच भी नहीं सकते हैं।

हाँ, आज के दौर में तो इतने शक्तिशाली कम्प्यूटर बन गये हैं जो एक सेकिण्ड में आठ करोड़ अंकों को जोड़ सकते हैं और इतने ही अंकों का गुणा कर सकते हैं। कम्प्यूटर में हजारों की संख्या में इलेक्ट्रॉनिक यंत्र लगे होते हैं। ये ही यंत्र सारे काम करते हैं।

वास्तव में हम कम्प्यूटर को इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क की उपमा दे सकते हैं। समाधान में कोई गलती कर देता है तो उसे स्वयं ठीक भी कर सकता है।

कम्प्यूटर शतरंज, सांप-सीढ़ी, कैरम जैसे खेल भी खेल सकता है।

यह सच है कम्प्यूटर याददाश्त का एक अजूबा केन्द्र है जो हजारों लाखों सूचनाओं को अपने अन्दर संग्रह कर सकता है और जरूरत पड़ने पर उस सूचना को प्राप्त भी किया जा सकता है।

आज विश्व में ऐसे भी कम्प्यूटर बन गये हैं जो उड़ते हुए विमानों, अंतरिक्षयानों, रॉकेटों और मिसाइलों को जमीन से ही नियंत्रित कर सकते हैं, उड़ान के दौरान उनकी दिशा और गति को कम्प्यूटर के माध्यम से ज्ञात किया जा सकता है और बदला भी जा सकता है।

दो बाल कविताएं : कीर्ति श्रीवास्तव

सीखो

सुबह जल्दी उठना सीखो,
ब्रुश फिर कुल्ला करना सीखो।
सूर्य नमस्कार करके तुम,
आँगन में दौड़ लगाना सीखो।।

सेहत तुम्हारी बन जाएगी,
दूध गर तुम पीना सीखो।
नहा-धो, तैयार होकर,
स्कूल में जाकर पढ़ना सीखो।।

अच्छे बच्चे कहलाना है तो,
बड़ों का आदर करना सीखो।
खेल-कूद भी है जरूरी,
नित-नये खेल, खेलना सीखो।।

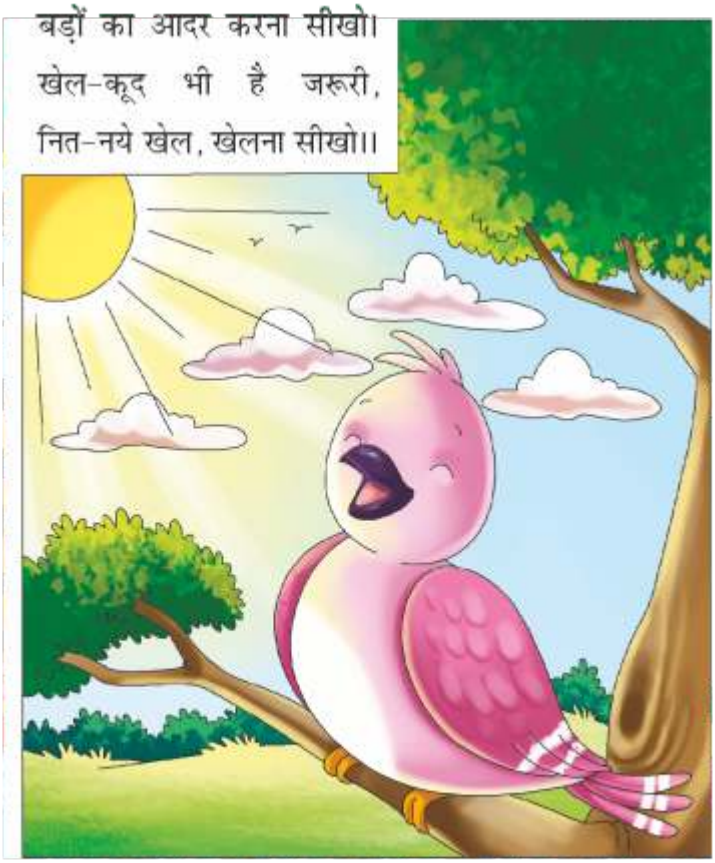

सुबह-सवेरे

सुबह-सवेरे चिड़िया बोली,
धूप ने देखो खेली होली।
आँखें खोलो, मुँह को धो लो,
फिर भर लो सपनों की झोली।।

मुर्गे ने कुकड़ूं-कू सुना दी,
कोयल ने भी कूक लगा दी।
धरती सोने सी चमक रही,
फूलों ने खुशबू बिखरा दी।।

पंछी हो तुम नील गगन के,
फूल भी हो तुम अपने चमन के।
जाओ अब खुशबू बिखराओ,
जल्दी से शाला हो आओ।।

कहानी : परशुराम संबल

संगति का प्रभाव

एक राजकुमार था। वह अपने साथियों के साथ एक दिन जंगल में शिकार खेलने के लिये गया। दिन ढलने लगा था। शिकार की खोज में दिनभर भटकते-भटकते राजकुमार और उसके साथी थककर चूर हो गये थे किन्तु एक शिकार भी हाथ नहीं लगा था। वे निराश होकर लौटने ही वाले थे कि अचानक राजकुमार की दृष्टि एक हिरन पर पड़ी। उसने अवसर को गंवाना उचित नहीं समझा और तुरन्त अपना घोड़ा उसके पीछे लगा दिया। घने जंगल में भागते हुए

राजकुमार अपने साथियों से बिछुड़ गया। लम्बी-लम्बी कुलांचें भरता हुआ हिरन भी जंगल में बनी एक छोटी-सी बस्ती में जाकर गुम हो गया। वह बस्ती डाकुओं की थी। पहली ही झोंपड़ी के बाहर एक पिंजरा लटका हुआ था। उसमें एक तोता उछलकूद मचा रहा था। जैसे ही उसने राजकुमार को आते हुए देखा तो वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा– आओ, जल्दी करो, इसे पकड़ो। इसके पास बहुत सारे कीमती आभूषण हैं कीमती घोड़ा है। सब कुछ लूट लो। मारो भागने न पाये।

तोते की रट सुनकर राजकुमार चौकन्ना हो गया। उसने तुरन्त घोड़ा वहीं रोका और वापिस मोड़कर ऐड़ लगा दी। घोड़ा तेज गति से वापस भागने लगा। राजकुमार समझ गया था कि यह बस्ती डाकुओं की है। अगर जरा-सी भी देर की तो प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा। वास्तव में ही देखते-देखते कई डाकू बाहर निकल आये। काफी दूर तक उन्होंने उस राजकुमार का पीछा किया। परन्तु राजकुमार का घोड़ा तो हवा से बातें कर रहा था। इसीलिये उसे पकड़ पाने में असमर्थ होकर वे वापिस लौट गये।

काफी दूर आकर राजकुमार को एक सुरक्षित स्थान दिखाई पड़ा। यह किसी महात्मा का आश्रम था। उसके प्रांगण में शिष्य घूम रहे थे। राजकुमार की दृष्टि आश्रम के प्रवेश द्वार के एक छोटे से वृक्ष पर पड़ी। उसने देखा कि आश्रम के उस वृक्ष की टहनी में एक पिंजरा लटक रहा है। उसमें एक तोता शान्त बैठा है। तोते को देखकर राजकुमार का हृदय आशंकित हो उठा कि कहीं साधु के वेश में ये स्थान भी लुटेरों का ही न हो? जैसे ही राजकुमार ने अपना घोड़ा मोड़ना चाहा, तोता जोर से बोल उठा– अभिवादन राजकुमार! आइये अन्दर पधारिये आश्रम में आपका स्वागत है।

राजकुमार तोते के मुख से ऐसे मधुर वचन सुनकर आश्चर्यचकित रह गया। राजकुमार को देखकर आश्रम के शिष्यगण भी आ गये। वे राजकुमार को आश्रम में ले जाकर उसकी आवभगत करने लगे।

राजकुमार बैठा, शान्त मन से कुछ सोच रहा था। विचारमग्न देखकर आश्रम के गुरुदेव ने उससे पूछा– राजकुमार, आप इतने अशान्त और गम्भीर क्यों हैं? क्या अत्यधिक थकान के कारण ऐसा है? आपके सम्मुख फल और जलपात्र रखे हैं। इनका सेवन करके अपनी प्यास और क्षुधा शान्त करें। आपके विश्राम की व्यवस्था कर दी गई है।

–मुनिदेव मैं भूख, प्यास या थकान के कारण इतना विचलित नहीं हूँ। मैं अन्तर के विषय में सोचकर ज्यादा परेशान हूँ।– राजकुमार ने जलपात्र उठाते हुए कहा।

–कौन-सा, कैसा अन्तर राजकुमार? जरा विस्तार से बताइये– मुनिदेव ने कहा।

डाकुओं की बस्ती के तोते का वृतान्त सुनाते हुए राजकुमार ने कहा– मुनिदेव आश्रम के इस तोते में और उस तोते में तो जमीन आसमान का अन्तर है। दोनों एक ही जाति के पक्षी हैं। परन्तु दोनों के स्वभाव और वाणी में बड़ा अन्तर है ऐसा क्यों?

मुनिदेव ने मुस्कुराकर राजकुमार की शंका का समाधान करते हुए कहा– राजकुमार डाकुओं के तोते ने उनके मध्य रहकर सदैव हिंसा, लूटमार और असभ्यता ही देखी है, इसलिये उसने मारो-मारो, पकड़ो, लूटो आदि शब्दों का उच्चारण ही सीखा है। लेकिन आश्रम का तोता मुनियों के बीच रहता है। उसके कानों में हर समय मधुर, सभ्य और सरस वाणी का ही संचार होता है। इसलिये वह सद्गुण ग्रहण करता है।

राजकुमार ने कुसंग के कुप्रभाव और सत्संग की महिमा को खूब जाना भी और सीखा भी।

दादा जी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

आदिवासी क्षेत्र में एक गाँव शिक्षा में बहुत ही पिछड़ा हुआ गाँव था। गाँव के लोगों को शिक्षित करने के लिए सरकारी सेवा से सेवामुक्त एक गुरूजी ने गाँव के लोगों को पढ़ाने के लिये एक शिक्षा केन्द्र खोला।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र

गाँव के इस शिक्षा केन्द्र में थोड़े से बच्चे पढ़ने आते थे। अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को जंगल में भेड़-बकरिया चराने भेज देते थे।

5×5=25
3+2=5
4+1=5

गुरूजी उन शिक्षकों में से नहीं थे जिनके लिए शिक्षा केवल एक व्यवसाय था। उनमें एक अच्छे शिक्षक के भरपूर गुण थे। उन्हें जब भी समय मिलता तो वे गाँव में शिक्षा के प्रचार के लिये निकल जाते। गुरूजी दिल से चाहते थे कि पूरा खेरागढ़ गाँव साक्षर बने।

इसके लिये उन्होनें रात के समय प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र की शुरूआत की, ताकि किसानों को रात के समय में पढ़ने का मौका मिले। गुरूजी के कहने पर 8-10 किसान आने तो लगे, मगर धीरे-धीरे कम भी होने लगे।

फिर एक दिन पता लगा कि भोलू किसानों को बहका कर पढ़ाई से दूर ले जा रहा था। वह किसानों से कहता कि भाईयों पढ़-लिख कर क्या करोगे। तुम्हे कौन सी नौकरी करनी है। हम सारा दिन मेहनत करते हैं उसके बाद जो थोड़ा सा समय मिलता है वह गपशप के लिए है

सभी किसान भोलू की बातों में आ गए और शिक्षा केन्द्र आना बंद कर दिया। और पहले की तरह चौपाल में इकट्ठे होकर गप्पे मारने लगे।

इसी बीच गुरूजी को किसी काम से बाहर जाना पड़ा।
फिर एक दिन भोलू के घर पत्र आया। पढ़ना तो उसे आता नहीं था। वह उसी समय ऐसे व्यक्ति को खोजने लगा जो पत्र पढ़ देता। परन्तु ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला। कुछ किसान जो कुछ दिन शिक्षा केन्द्र गए थे उनसे केवल इतना पता चला कि वह पत्र उसके भाई का है जो शहर में रहता है।
D/24
भोलू की चिन्ता बढ़ने लगी। कहीं कुछ हो तो नहीं गया। भोलू बिना कुछ सोचे समझे ही शहर चला गया। वहाँ पहुँचा तो घर पर ताला लगा पाया। उसका दिल अब जोरों से धड़कने लगा था। जैसे तैसे उसने मकान मालिक से भाई के विषय में पूछा तो उसने बताया कि वह किसी काम से दूसरे शहर गया है।

यह सुनते ही भोलू की जान में जान आई। सुबह से बिना कुछ खाये-पिये और लम्बे सफर के कारण वह बहुत थक गया था। आखिरकार वह गाँव की ओर वापस चल दिया। पूरे रास्ते वह सोचता रहा कि अगर उसे पत्र पढ़ना आता तो आज उसे शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक नुकसान न उठाना पडता।

भोलू अपनी पिछली स्थिति के बारे में सोच कर हँसने लगा और समझ गया कि वह कितने कम ज्ञान तक सीमित है। उसे गुरूजी की कही सभी बातें समझ आने लगीं कि पढ़ना कितना जरूरी है। गाँव पहुँचते ही उसने शिक्षा केन्द्र जाना शुरू कर दिया तथा दूसरों को भी शिक्षा केन्द्र जाने की बात करने लगा।

गुरूजी के लौटते ही भोलू ने उन्हे सब कुछ बताया तथा उनका सत्कार किया। अब धीरे-धीरे शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वालों की संख्या बढ़ने लगी। धीरे-धीरे वह गाँव साक्षरता की ओर बढ़ रहा था। यह सब देख गुरूजी की खुशी का ठिकाना नहीं था।

बच्चो! ज्ञान का प्रकाश अशिक्षा के अंधेरे को दूर करता है और आपके विकास तथा उन्नति में सहायक सिद्ध होता है।

समाचार

अब भूसे से भी बनेगा गैसोलीन

लंदन (भाषा)। वैज्ञानिकों ने भूसे या बुरादे से गैसोलीन/ईंधन बनाने का नया तरीका खोज लिया है। इससे गैस संयंत्रों को हरित ईंधन बनाने में और मदद मिलेगी। बेल्जियम के लुवेन स्थित कैथोलीक यूनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने भूसे में पर्याप्त मात्रा में मौजूद सेलुलोज को हाइड्रोकार्बन चेन के रूप में विकसित करने का तरीका खोज लिया है। विश्वविद्यालय के बर्ट सेल्स का कहना है कि इस हाइड्रोकार्बन को गैसोलीन में मिलाकर ईंधन के रूप में इसका प्रयोग किया जा सकता है। सेलुलोज मिश्रित गैसोलीन 'सेकेंड जेनरेशन जैवईंधन' होगा।

हम पौधों के अवशेषों से शुरुआत कर उसे पेट्रोकेमिकल के रूप में विकसित करने के लिए एक रासायनिक प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं।

मुड़ सकने वाला टच स्क्रीन टैबलेट विकसित

टोरंटो (भाषा)। वैज्ञानिकों ने पहली बार एक लपेटे या मोड़े जा सकने वाला टच स्क्रीन टैबलेट विकसित किया है। आधुनिक समय के उपकरण को बनाने के लिए वैज्ञानिकों ने पुराने समय के स्क्रोल से प्रेरणा ली है।

मैजिक स्क्रोल नाम के इस उपकरण में हाई रेजोल्यूशन का एक लचीला डिसप्ले है जिसे बीच में बने एक थ्रीडी प्रिंटेड गोलाकार बॉडी की तरफ मोड़ा या खोला जा सकता है। इसी गोलाकार बॉडी में उपकरण की कम्प्यूटरीकृत अंदरूनी कार्यप्रणाली मौजूद होगी।

गोलाकार बॉडी के दोनों सिरों पर लगे दो घूमने वाले चक्कों के जरिए यूजर टच स्क्रीन पर सूचनाओं को स्क्रोल कर सकते हैं। अगर यूजर किसी दिलचस्प कंटेंट से गुजरता है और उसे ज्यादा गहराई से पढ़ना चाहता है तो डिसप्ले को उल्टा भी किया जा सकता है। इसके हल्के वजन और गोलाकार बॉडी की वजह से इसे पारंपरिक टैबलटों के मुकाबले एक हाथ से पकड़ना ज्यादा आसान है। इसे मोड़कर जेब में भी रखा जा सकता है और फोन के तौर पर इसका इस्तेमाल भी किया जा सकता है। **(साभार, रा.स.)**

– संकलनकर्ता : बबलू कुमार

कविता : हरजीत निषाद

रंग बिरंगे फूल

बच्चों! हर मौसम में फूल हैं खिलते,
रंग बिरंगे फूल।

देवालय में देव देवियों के, सिर चढ़ते फूल।
सेनानी जाते सीमा पर, पथ पर बिछते फूल।
डालों पर हँसते टूटें, तब भी हँसते फूल।
हर मौसम में फूल हैं खिलते, रंग बिरंगे फूल।

तितली फूलों पर मंडराती, जहाँ भी दिखते फूल।
शहद बनाती है मधुमक्खी, रस देते हैं फूल।
जूही चंपा और चमेली, सदा महकते फूल।
हर मौसम में फूल हैं खिलते, रंग बिरंगे फूल।

दूर दूर तक फैले ट्यूलिप, और सरसों के फूल।
बिकते बाजारों में ढेरों, गेंदे गुलाब के फूल।
प्रेम उजागर करते, दुख मानव का हरते फूल।
हर मौसम में फूल हैं खिलते, रंग बिरंगे फूल।

सजी क्यारियां फूलों से, बागों में सजते फूल।
कपड़े बन तन को ढकते, उजले कपास के फूल।
गुलदस्तों में शोभा पाते, माला बनते फूल।
हर मौसम में फूल हैं खिलते, रंग बिरंगे फूल।

लघु कहानी : रामअवध राम

सुकरात और ज्योतिषी

यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात एक बार अपनी शिष्य-मंडली में चर्चा करने में व्यस्त थे। उसी समय एक घूमता-घामता ज्योतिषी वहाँ पहुँचा। वह चेहरा देखकर व्यक्ति के बारे में बता देता था। सुकरात और उनके शिष्यों के सामने भी उसने यही दावा किया। सुकरात एक अच्छे दार्शनिक थे। वह बदसूरत थे पर लोग उन्हें उनके सुन्दर विचारों के कारण अधिक चाहते थे।

ज्योतिषी सुकरात का चेहरा देखकर कहने लगा– इसके नथुनों की बनावट बता रही है कि इस व्यक्ति में क्रोध की भावना प्रबल है।

यह सुनकर सुकरात के शिष्य नाराज हो गये, परन्तु सुकरात ने उन्हें रोककर ज्योतिषी को अपनी बात कहने का पूरा मौका दिया। ज्योतिषी आगे कहने लगा– इसके माथे और सिर की आकृति के कारण यह निश्चित रूप से लालची होगा। इसकी ठोडी की रचना कहती है कि यह बिल्कुल सनकी है। इसके होठों और दाँतों की बनावट के अनुसार यह व्यक्ति सदैव देशद्रोह करने के लिए प्रेरित रहता है। यह सब सुनकर सुकरात ने ज्योतिषी को इनाम देकर भेज दिया। यह देखकर सुकरात के शिष्य भौचक्के रह गये। सुकरात ने उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए कहा कि सत्य को दबाना ठीक नहीं। ज्योतिषी ने जो कुछ बताया वे सब दुर्गुण मुझमें हैं। मैं उन्हें स्वीकार करता हूँ पर उस ज्योतिषी से भूल अवश्य हुई है। वह यह कि उसने मेरे विवेक शक्ति पर जरा भी गौर नहीं किया। मैं अपने विवेक से इन दुर्गुणों पर अंकुश लगाये रखता हूँ, ज्योतिषी यह बताना भूल गया।

प्रस्तुति : ऊषा सभरवाल

शेक्सपीयर

थियेटर कम्पनी के मालिक को द्वारपाल ने आकर कहा– श्रीमान् आपसे कोई युवक मिलना चाहता है।

''भेज दो।'' सामने आया एक बीस-इक्कीस साल का ग्रामीण युवक जिसने ढीले-ढीले कपड़े पहन रखे थे। शरीर बेडौल व भोंडा चेहरा। यह सब देखकर मालिक को हँसी आ गई।

''कहो नौजवान कैसे आना हुआ।''

''मैं आपकी थियेटर कम्पनी में खेले जाने वाले नाटकों में कोई भी भूमिका निभाने की नौकरी चाहता हूँ।'' तत्क्षण ही थियेटर कम्पनी के मालिक ने कहा, ''देखो भाई मेरी दृष्टि में तो तुम केवल विदूषक की भूमिका के काबिल हो। कोई और अच्छी भूमिका तुम नहीं कर सकते।''

''ठीक है श्रीमान! यही करूँगा। हाँ, वेतन कितना मिलेगा।''

''शुरू-शुरू में तुम परीक्षण पर रहोगे। निर्वाह के लिए जो न्यूनतम आवश्यकताएं हैं। पूरी कर दी जाएंगी। उसके बाद काम देखकर वेतन में वृद्धि कर दी जाएगी।''

युवक ने थियेटर में विदूषक की भूमिकाएं निभाना प्रारम्भ कर दिया। परिश्रम तथा परिपक्वता का सम्बल लेकर वह इतना प्रसिद्ध हो गया कि अनेक बड़ी-बड़ी कम्पनियों में प्रतिस्पर्धा होने लगी।

उस अभिनेता का नाम था– विलियम शेक्सपीयर। इंग्लैंड के स्ट्रेटफोर्ड नामक ग्राम में जन्म लेकर अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करता हुआ वह सफलता की सीढ़ियां चढ़ता गया। बाद में वह संसार का विख्यात नाटककार हो गया। ''जो परिस्थितियों के दास नहीं बनते वे विजयश्री के स्वामी बन जाते हैं।''

कहानी : रामफल

अपनी कमाई

बहुत दिन पहले की बात है। पुष्पदन्तपुर नामक राज्य में पुष्पराज सिंह नाम का राजा राज्य करता था। वह विद्वानों और ऋषियों को भोजन कराता और काफी अशर्फियां दान में देता। एक दिन एक ऋषि राजा के पास आया। राजा ने उसका बहुत आदर-सत्कार किया, भरपेट भोजन कराया और फिर अशर्फियां दान में देने लगा।

ऋषि ने राजा से पूछा– हे नृप! क्या यह आपकी अपनी कमाई का द्रव्य है?

राजा ने उत्तर दिया– ऋषि! मैं यहाँ का राजा हूँ। इस राज्य की सारी धन-सम्पत्ति मेरी ही है।

ऋषि ने अपना प्रश्न पुनः दोहराया– लेकिन महाराज! क्या यह धन स्वयं आपने कमाया है?

राजा को कहना पड़ा– नहीं ऋषिवर!

तब ऋषि बोला– हे राजन्! यदि आप अपनी कमाई में से एक पैसा भी आज मुझे देते तो मैं उसे सहर्ष स्वीकार करता, परन्तु आपके राजकोष का

सारा धन तो प्रजा के खून-पसीने की कमाई है, इसे मैं ग्रहण नहीं कर सकता।

इतना कहकर ऋषि वहाँ से चला गया।

इस घटना के बाद राजा ने स्वयं धन अर्जित करने का निश्चय किया।

दूसरे दिन प्रातः वह साधारण आदमी का वेश धारण कर महल से निकल पड़ा। चलते-चलते वह एक लुहार की दुकान पर पहुँचा। राजा ने लुहार से कुछ काम देने की प्रार्थना की। लुहार ने उसे एक हथौड़ा और एक लोहे की छड़ देते हुए कहा– तुम इस छड़ को भट्ठी में तपाकर हथौड़े से पीट-पीटकर कुदाल का आकार दो।

दो घंटे के अथक परिश्रम के बाद राजा थककर चूर हो गया मगर छड़ को सही रूप न दे सका। लुहार ने राजा को एक पैसा देकर विदा कर दिया।

इसके बाद राजा एक खेत पर पहुँचा। उसने दोपहर के समय चिलचिलाती धूप में एक किसान को फसल काटते देखा। राजा भी किसान से अनुमति लेकर हँसिये से फसल काटने लगा। शाम तक बड़ी मुश्किल से वह थोड़ी-सी ही फसल काट पाया। फसल काटते समय उसने कई जगह से अपने हाथों को भी काट लिया था। किसान ने भी उसे मजदूरी के रूप में एक पैसा दिया। फिर राजा अपने महल में लौट आया।

राजा ने दूसरे दिन उसी ऋषि को महल में बुलवाया और दो पैसा देते हुए कहा– हे ऋषिश्रेष्ठ! यह धन मेरी अपनी कमाई का है, कृपा कर इसे स्वीकार करें और मुझे कृतज्ञ करें।

ऋषि ने दान स्वीकार कर लिया और राजा को आशीर्वाद देते हुए बोला– राजन! मेहनत से धन पैदा करना बहुत मुश्किल होता है परन्तु यह भी सत्य है कि परिश्रम का फल अन्ततः मीठा होता है।

–कहानी की सत्यता जो भी रही हो परन्तु यह सत्य है कि मेहनत की कमाई से ही आत्म-संतुष्टि प्राप्त होती है।

विज्ञान कथा : राधेलाल 'नवचक्र'

प्लास्टिक की खोज

शशि, सुमन और संतोष तीनों छात्र अध्यापक विजयसेन के सुकोमल व्यवहार एवं बातचीत करने के अनूठे तरीके से बहुत खुश नजर आ रहे थे। कल तक जो विषय उन्हें नीरस जान पड़ता था, अब सरस लगने लगा। यह भी उनके पढ़ाने के ढंग का ही कमाल था।

सुबह सुमन ने अध्यापक महोदय से कहा– आज हम लोग बाजार घूमने चलेंगे।

–बहुत खूब!– शशि और संतोष ने भी अपनी सहमति दे दी।

–फिर चलो– अध्यापक महोदय भी तैयार हो गये। सभी चल पड़े।

बाजार में उन्होंने प्लास्टिक की बनी ढेर सारी चीजें देखी। कुछ खरीदी भी। लौटते समय अध्यापक महोदय ने उन्हें रास्ते में पूछा– मालूम है, प्लास्टिक की खोज किसने की है?

–नहीं तो!– तीनों बोल उठे।

–एक बिल्ली ने।

–बिल्ली ने?– तीनों अवाक् हो गये। मानो उन्हें अध्यापक महोदय की बात पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ।

–हाँ, एक बिल्ली ने ही उसकी खोज की है।– अध्यापक महोदय ने अपनी बात पर जोर देकर कहा।

–किस तरह खोज की?– संतोष ने जिज्ञासावश पूछा।

–संयोगवश।

–इस खोज के बारे में हमें पूरी तरह बताएं।– तीनों ने व्यग्रता जाहिर की।

–अच्छा सुनो।– अध्यापक महोदय ने कहना आरम्भ किया।– एक रसायनज्ञ था। अपनी प्रयोगशाला में वह किसी प्रयोग सम्बन्धी कार्य में डूबा-खोया हुआ था। कुछ देर बाद न जाने कहाँ से

एक बिल्ली उसकी प्रयोगशाला में आ घुसी। रसायनज्ञ का ध्यान उस ओर जा खिंचा... ।

–और फिर?– अध्यापक महोदय को यकायक चुप होते देखकर सुमन ने उन्हें टोका।

वह बोले– अपनी जगह पर बैठे-बैठे ही रसायनज्ञ महोदय ने बिल्ली को भगाना चाहा। इसके लिए उसने पूरी कोशिश की। नतीजा हुआ कि बिल्ली तुरन्त भाग तो गई लेकिन हड़बड़ाहट में उसने एक गड़बड़ी कर दी।

–क्या गड़बड़ी की?– संतोष उत्सुक हो उठा।

अध्यापक विजयसेन ने बताया– बिल्ली जो तेजी से भागी तो उसके पैरों से फॉर्मेल्डिहाइड नामक रसायन की एक बोतल लुढ़क गई। उस बोतल के पास ही पनीर रखा था। फलतः उस रसायन का कुछ अंश पनीर पर जा गिरा।

–फिर क्या हुआ?– शशि ने पूछा।

–उस समय रसायनज्ञ महोदय अपने कार्यों में इतने व्यस्त थे कि इस घटना की ओर उसका बिल्कुल ध्यान नहीं गया। थोड़ी देर बाद जब उसने उस ओर देखा तो वह चकित रह गया।

सामने सड़क पर किसी वाहन को आते देखकर अध्यापक महोदय बीच में ही चुप हो किनारे हो गये। सभी लड़कों ने भी उनका अनुसरण किया। फिर सुमन ने अध्यापक महोदय से जिक्र किया।– रसायनज्ञ क्यों चकित रह गया?

–बताता हूँ।– अध्यापक बोले– पनीर उस रसायन के असर से ठोस प्लास्टिक में बदल गया था। बिना किसी मेहनत के एक नई उपलब्धि उस रसायनज्ञ को मिल गयी थी।

–बिल्ली ने तो सचमुच कमाल कर दिया।– तीनों बोल उठे।

–ऐसा ही समझो।– अध्यापक ने सहमति जाहिर की।

अब वे घर के निकट आ पहुँचे थे। थके और भूखे थे ही, तेजी से घर जा घुसे। अध्यापक महोदय ने भी अपनी राह पकड़ी।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

आरोग्य दिवस (5 फरवरी) पर विशेष

मानव और स्वास्थ्य

मानव के पावन शरीर में,
अंग बहुत से रहते।
कुछ दिल सा धक धक करते हैं,
और नहीं कुछ कहते।।

आँख नाक मुँह कान आदि से,
सुन्दर मुखड़ा बनता।
देख इसे शीशे में मुन्ना,
बनता और संवरता।।

गुर्दे, मगज, फेफड़े भी सब,
काम बहुत से करते।
इनमें गड़बड़ हुई जरा तो,
बिना मौत हम मरते।।

नियमित जीवन इस शरीर को,
सुन्दर स्वस्थ बनाता।
इसीलिए छोटू संग मोटू,
सुबह टहलने जाता।।

योग और कसरत ये दोनों,
नियमित करना भाई।
कभी नहीं बीमार पड़ोगे,
बात समझ में आई।।

प्रभु पर रख विश्वास हमेशा,
प्रभु को शीश झुकाना।
प्रभु की सत्ता सर्वोपरि है,
संतों ने पहचाना।।

प्रभु सेवा से बच्चों सबके,
दिल दिमाग सुख पाते।
दिल दिमाग दोनों मानव की,
लम्बी उमर बनाते।।

भोजन भी मानव शरीर में,
अपना असर दिखाता।
जैसा भोजन हम करते हैं,
वैसा मन हो जाता।।

और अन्त में तुमको बच्चों,
एक बात बतलाता।
अंग सभी उपयोगी होते,
यह तुमको समझाता।।

सब अंगों का ध्यान रखो तुम,
सबसे प्रीति लगाओ।
स्वस्थ शरीर बनाकर अपना,
जीवन सफल बनाओ।।

कहानी : कमल सौगानी

सन्त की बात

एक था शिकारी। अभी वह शिकार खेलने में ज्यादा कुशल नहीं था। हाँ, उसमें एक विशेषता यह थी कि वह बांस के बाजे से तरह-तरह के जानवरों की बोलियां पैदा कर सकता था। इसी विद्या के कारण वह जानवरों को भुलावा देकर अपने नजदीक बुला लेता और अचानक उन पर हमला कर देता।

ऐसे ही एक बार, वह एक बीहड़ जंगल में शिकार करने गया और वहाँ बांस के बाजे को जोर से बजाने लगा। एक सन्त-महात्मा भी उधर से गुजर रहे थे। बाजे की आवाज सुनकर सन्त उसके पास आकर बोले– यहाँ बीहड़ जंगल में इस तरह बाजा बजाने की क्या तुक है?

शिकारी ने जवाब दिया– मैं इसी बाजे के माध्यम से विभिन्न पशुओं की बोलियां निकाला करता हूँ और इन बोलियों के कारण मुझे शिकार करने में बड़ी सरलता होती है।

सुनकर सन्त ने कहा– सो तो ठीक है, लेकिन मेरी एक बात याद रखना।

—कौन सी बात?— शिकारी ने पूछा।

—यही कि हिरन भेड़िये से डरता है, भेड़िया बाघ से और बाघ जंगली भालू से। हाँ एक बात और जंगली भालू अत्यन्त बलवान होता है। उसके बाल लम्बे होते हैं और वह आदमी की तरह खड़ा भी हो सकता है।

शिकारी को बहुत गुस्सा आया। उसने बीच में ही सन्त को टोककर कहा— सन्त जी! आखिर मैं भी एक शिकारी हूँ, जो आपने बात बताई वह तो एक साधारण इन्सान भी जानता है। आपने ऐसी बात बताकर व्यर्थ ही मेरा और आपका समय नष्ट किया।

फिर शिकारी बाजा बजाता हुआ चल दिया। अचानक उसकी निगाह हिरनों के झुण्ड पर पड़ी। उसने हिरन का शिकार करने के लिए उन्हें तितर-बितर करने की सोची और बाजा बजाकर हिरन की आवाज निकालने लगा। तभी एक भेड़िया हिरन मारने उसके सामने आ पहुँचा। भेड़िया को देखकर शिकारी भय के मारे थर-थर कांपने लगा और उसके तीर कमान जमीन पर आ गिरे। अचानक उसे याद आया कि सन्त ने कहा था— 'भेड़िया बाघ से डरता है।' सो उसने फौरन बाघ की आवाज निकाली, जिसे सुनते ही भेड़िया दहशत खाकर भाग खड़ा हुआ।

भेड़िया को दूर भागते देखकर शिकारी एक पल के लिए मन ही मन बड़ा खुश हुआ लेकिन दूसरे ही पल उसके होश इसलिए उड़ गये कि उसके द्वारा निकाली गई बाघ की आवाज सुनकर वहाँ भालू आ धमका।

अब शिकारी के पास बचने का कोई उपाय नहीं रह गया था। जंगली भालू उसे पकड़कर उठाया और उसे अपनी गुफा में ले गया।

काश! वह शिकारी सन्त की कही बात को पूरी तरह से गले उतार लेता तो वह जीवित बच सकता था।

प्रस्तुति : राधा नाचीज़

पहेलियां

1. जब थी मैं भोली-भाली,
तब पहनी चोली हरियाली।
जब भए सर पर नये बार,
तब पहना मोतियों का हार।।

2. थल से निकला थल धरा,
थल जाए कुम्हलाय।
जाओ आग में फूंक दो,
उमर उसकी बढ़ जाए।।

3. जला के हमने उसे बनाया,
आँखों में वह खूब समाया।

4. छम-छम करके शोर मचाए,
सोतों को वह आन जगाए।
एक पलक में शान जताए,
रोतों को वह आन हँसाए।।

5. छोटी चपाती बड़ी चपाती,
लड़ती छका छक।
पड़े मियां बाहर भागे,
करते फका फक।।

6. उसका घर फौलादी चादर,
जल के भीतर जल के बाहर।
संग हर जगह जाता है,
कभी छूट न पाता है।।

उत्तर : 1. भूट्ठा (छल्ली), 2. ईट, 3. काजल, 4. बारिश, 5. चक्की, 6. कछुआ।

लेख : जयेन्द्र

अनोखा जन्तु : जैकाना

संसार में 'जैकाना' की सात प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से केवल दो प्रजातियां हमारे देश में देखने को मिलती हैं। हमारे देश में प्रायः सभी भागों में यह पाया जाता है। इसे हिमालय की 6 हजार फुट तक की ऊँचाई वाले स्थानों पर भी देखा जा सकता है। हमारे देश के अतिरिक्त यह ऑस्ट्रेलिया, बर्मा, बांग्लादेश, अफ्रीका, पेरु, अमेरिका में भी यह पाया जाता है। इसकी कुछ विदेशी प्रजातियां जहरीली भी होती हैं।

जैकाना का सिर, गर्दन और वक्ष का रंग चमकीला काला तथा पीठ और पंख गहरे रंग के होते हैं। इसके दुम नहीं होती है। यह कुशल तैराक होने के साथ ही साथ अच्छा गोताखोर भी होता है। इसके अण्डे हरे या भूरे बादामी रंग के होते हैं।

इस जन्तु को गाँव के निकट के तालाबों, पेड़-पौधों से ढकी हुई झीलों तथा दलदल वाले स्थानों पर रहना बहुत पसन्द है। यह जल कुमुदिनी तथा सिंघाड़े की बेलों पर पांव रखता हुआ इस तरह आगे बढ़ता है कि दूर से देखने पर लगता है मानो पानी पर चल रहा हो। यह सामान्यतः झुण्ड में रहता है तथा विश्रामकाल में इसके 100 से 150 तक के झुण्ड देखे जा सकते हैं, कई बार इनमें आपस में घमासान युद्ध भी होता है।

इस जन्तु का मुख्य आहार पानी में पाए जाने वाले कीड़े-मकोड़े तथा वनस्पतियां हैं। इनके अतिरिक्त यह विभिन्न प्रकार के जलीय पौधों के बीज तथा जड़े भी खाता है, भिन्न-भिन्न देशों में जलवायु के कारण यह मांसाहारी भी होता है। अफ्रीका में इस जन्तु का वर्ण श्याम होता है, इसकी आंखें छोटी-छोटी और लम्बाई फुट भर होती है। यह अक्सर कीड़े-मकोड़े, बिच्छू, कनखजूरा, कॉक्रोच, चूहे आदि को अपना भोजन बनाता है। यहाँ इसकी एक जहरीली प्रजाति 'टिर्रा' पाई जाती है, जिसके विष का असर बहुत तेज होता है।

अमेरिका में 'जैकाना' भूरे स्लेटी रंग का होता है। यह पेड़ों की शाखाओं पर घात लगाकर छोटी चिड़ियों, परिन्दों के अण्डों का शिकार करता है। इसके अतिरिक्त यह नागिन के नवजात बच्चों को बड़ी तरकीब से चुराकर हजम कर जाता है। यह बड़ा गुस्सैला होता है, छेड़ने पर यह तुरन्त काट लेता है।

बांग्लादेश व पेरु में इस जन्तु का वर्ण मटमैला, पीला होता है। यह धान की फसलों के कीट-पतंगों को अपना शिकार बनाता है। इसके अतिरिक्त पौधों की जड़ें तथा मिट्टी के कीड़ों को भी बड़े चाव से चट कर जाता है। एक अचरज की बात इस जन्तु की मादा सदा इसे छेड़कर इधर-उधर नचाती रहती है।

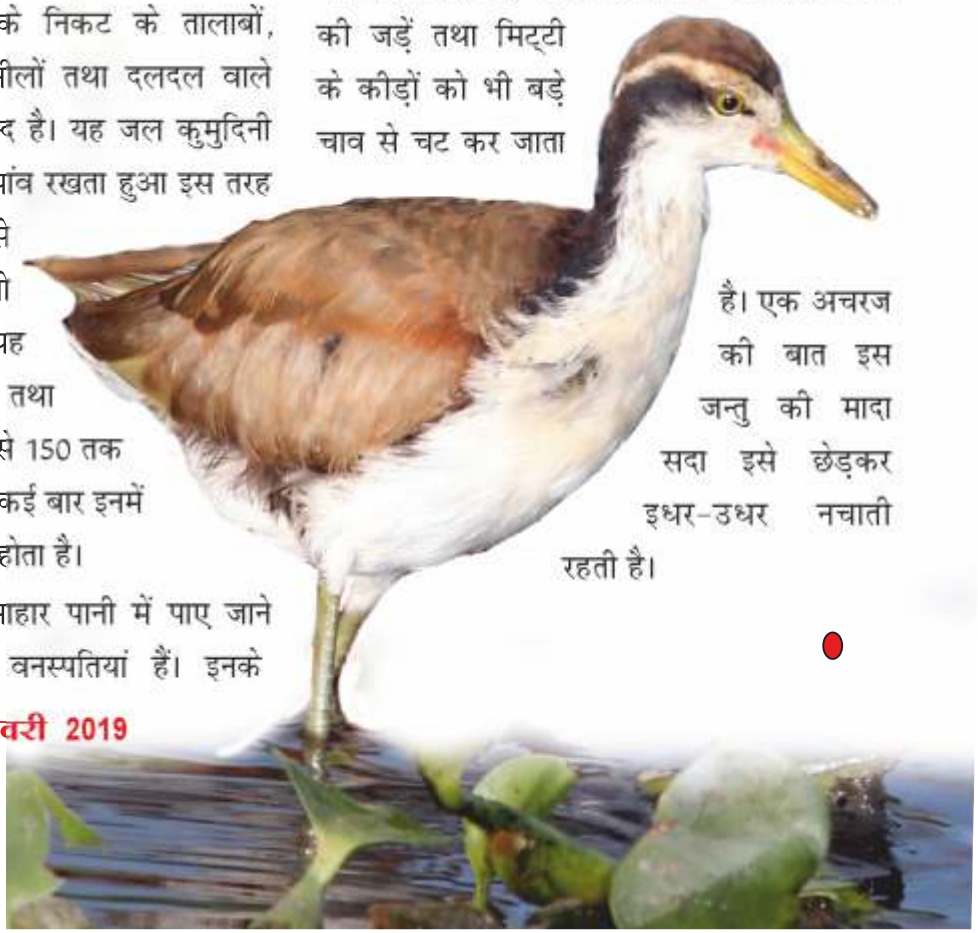

बाल कहानी : राजेन्द्र परदेसी

मेहनत की कमाई

रामपुर में एक लुहार रहता था। उसका नाम था गयाप्रसाद। उसके द्वारा बनाये खेती के औजार दूर-दूर के गाँवों के किसान आकर ले जाते। उसकी ईमानदारी और कार्यकुशलता की सभी लोग खुले दिल से प्रशंसा करते। उसका एक बेटा था। उसका नाम था माताप्रसाद। स्वभाव से वह पिता से एकदम अलग था। वह बड़ा ही आलसी और कामचोर था। वह किसी भी काम में रुचि नहीं लेता था। इसी से उसके माता-पिता बहुत परेशान रहते थे।

एक दिन गयाप्रसाद की पत्नी ने पति को सलाह दी कि अगर बेटे की शादी कर दी जाए तो जिम्मेदारी आने पर शायद वह सुधर जाये। काम में भी मन लगाने लगे।

पत्नी की राय से गयाप्रसाद सहमत नहीं हुआ। उसने कहा– जब तक माताप्रसाद अपनी मेहनत से कमाकर घर में कुछ नहीं लायेगा। उसकी शादी नहीं की जानी चाहिए। अच्छा हो तुम उसे ईमानदारी और मेहनत से कमाने की सलाह दो। जब वह कमाने लगेगा, मैं स्वयं ही उसकी शादी कर देना चाहूंगा।

गयाप्रसाद की यह सलाह उसकी पत्नी को अच्छी न लगी। वह तो कुछ और ही सोच रही थी। एक दिन उसने अपने बेटे माताप्रसाद के हाथ में कुछ सिक्के देकर बोली– ये सिक्के अपने पिता को शाम को देकर कहना कि आज मैंने मेहनत करके कमाया है।

शाम को माताप्रसाद माँ के द्वारा दिये गये सिक्कों को लेकर पिता के पास गया। उन्हें देकर माँ ने जैसा समझाया था, वैसा ही कहा।

गयाप्रसाद उस समय भट्टी पर बैठा औजार बना रहा था। उसने उन सिक्कों को भट्ठी में डाल दिया। पिता की इस कार्यवाही से माताप्रसाद खीझ उठा। वह बोला– आपने सिक्कों को भट्ठी में डालकर अपना ही नुकसान किया है। यह कहकर वह वहाँ से चल दिया। फिर अपनी माँ से सारी घटना कह सुनाई।

गयाप्रसाद की पत्नी को समझते देर न लगी कि उसके पति ने ऐसा क्यों किया। फिर भी वह चुप रही और बेटे को प्रतिदिन मेहनत और ईमानदारी का पाठ पढ़ाती रही।

एक दिन माताप्रसाद स्वयं की मेहनत से कमाये कुछ सिक्के लेकर पिता के पास गया और उन्हें देकर बोला– यह लीजिये; आज मैंने दिनभर मेहनत करके ईमानदारी से यह सब कमाया है।

गयाप्रसाद ने सिक्कों को हाथ में लेकर एक बार बेटे की ओर देखा फिर उन सिक्कों को भी भट्ठी में डाल दिया। इस बात पर माताप्रसाद बहुत क्रोधित हो गया और कहा– दिनभर मेहनत मजदूरी करके ये सिक्के कमाए थे और आपने उन्हें भट्ठी में डालकर नष्ट कर दिया। इससे आपका तो कुछ नहीं गया पर मेरी दिनभर की मेहनत बेकार हो गयी।

बेटे की बात सुनकर गयाप्रसाद तुरन्त भट्ठी पर से उठा और उसने बेटे को गले लगा लिया और कहा– बेटा! आज मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हें मेहनत की कमाई का मूल्य मालूम हो गया है। अब जीवन में कोई कष्ट नहीं होगा।

विज्ञान पहेलियां

प्रस्तुति : सौरभ कुमार गुप्ता (माधोगंज, हरदोई)

1. मैं हूँ एक ऐसा जीव, कभी नहीं मर सकता हूँ।
   मेरा निश्चित आकार नहीं, जैसा चाहूं बन जाता हूँ।।
2. नये जमाने का बच्चा हूँ, पर कान का कच्चा हूँ।
   तुम जो कहते इस पार, फैला आता हूँ उस पार।।
3. मैं नन्हा सा एक डिब्बा, मेरे अन्दर बहुत सामान।
   राबर्ट हुक है खोजी मेरे, मेरे बिना जीना हराम।।
4. क्यूरी दम्पति जनक जननी, तारीफ का पहना जामा।
   तीन नाम मेरी बेटी के, अल्फा बीटा गामा।।
5. बड़ा रसीला मेरा नाम, अति चमकीला गात।
   मुझे न छूना मेरे बन्दे, शरमायेगा हाथ।।

विज्ञान पहेलियों के उत्तर–

1. अमीबा, 2. रेडियो, 3. कोशिका,
4. रेडियम, 5. पारा।

कविता : मीरा सिंह 'मीरा'

ऋतुराज का आगमन

पीले परिधान पहनकर,
धरा खड़ी सजधज कर।
ऋतुराज तैयार खड़े है,
सिर पर सेहरा बांधकर।।

पीपल के पत्तों के बीच,
सूरज की किरणें फिसली।
चमक रहीं ओस की बूँदे,
जैसे हो मोती असली।।

नन्हीं सी एक तितली,
अपने घर से निकली।

बागों में की सैर सपाटे,
फूलों के संग खेली।।

खिल गयी कच्ची कलियां,
ओस में नहाकर।
झूम रही है धरा,
खुशी से इतराकर।।

बाल कविता : डॉ. हरीश निगम

वासंती चर्चे

कंबल, कोट, रजाई वाली,
मौसम ने दुकान उठा ली।

थर थर कंपने की आदत से,
सब लोगों ने छुट्टी पा ली।

जाने क्या कह दिया हवा ने,
लगी झूमने डाली डाली।

सरसों के पीले फूलों से,
भरी धरा की हरियल थाली।

सुनकर के वासंती चर्चे,
पत्ते लगे बजाने ताली।

जानकारीपूर्ण लेख : किरण बाला

अजब-गजब झरने

जलप्रपात तो आपने देखे होंगे और उन्हें देख रोमांचित भी हुए होंगे। ये हैं ही ऐसी चीज कि उसके सामने से हटने का मन ही नहीं करता है। आइये, आपको विश्व के कुछ खास जलप्रपातों के बारे में बताएं।

क्या आप जानते हैं, जलप्रपात का निर्माण कैसे होता है? पहाड़ों की चट्टानों से गिरने वाली नदी या नालों को जलप्रपात कहा जाता है। यदि गिरने वाले पानी की धारा पतली होती है तो उसे जलप्रपात कहा जाता है और गिरने वाला पानी एक बहुत बड़ी धारा के रूप में काफी ऊँचाई से गिरता है तो उसे महाजलप्रपात कहते हैं। पहाड़ों के ढलान से होकर गुजरने वाली पानी की धाराएं भी जलप्रपात होती हैं।

विश्व के अनेक पर्वतों पर विभिन्न प्रकार के गिरते हुए जलप्रपात देखने को मिलते हैं। इनमें से कुछ अपनी ऊँचाइयों के लिए तथा कुछ अपनी चौड़ाई के लिए प्रसिद्ध हैं। कुछ जलप्रपात पानी की अधिक मात्रा के लिए भी प्रसिद्ध है।

विश्व का सबसे ऊँचा जलप्रपात वेनेजुएला में स्थित साल्टो एंजिल है। यह केरिनो नदी की सहायक कराओ नदी पर स्थित है। उसकी ऊँचाई 979 मीटर है जिसमें एक सबसे लम्बी धारा की ऊँचाई 807 मीटर है।

साल्टो एंजिल प्रपात का नामकरण अमेरिकी विमान चालक जिम्मी एंजिल्स के नाम पर हुआ था, जिसने इसे अपने जहाज के रोजनामचे में नवम्बर

1933 को दर्ज किया गया था। वे प्रपात जिन्हें इंडियंस चेरू नमेरू नाम से जानते थे, उसकी भी सूचना 1910 में एरनेस्टो साल्वेज ला क्रूज ने दी थी।

जहाँ तक सबसे बड़े जलप्रपात का प्रश्न है, वर्षभर बहने वाले पानी के औसत के आधार पर विश्व का सबसे बड़ा जलप्रपात बॉयॉसा प्रपात है। यह जायरे में स्थित है। इसका अधिकतम जल प्रवाह 17000 घनमीटर प्रति सेकंड है।

इसी प्रकार विश्व का सबसे चौड़ा जलप्रपात लाओस का खोनेफाल्स है। इसकी चौड़ाई 10.8 किलोमीटर और प्रवाह 42500 घनमीटर प्रति सेंकड है।

न्यूयॉर्क से 25 किलोमीटर दूर उत्तर पश्चिम में स्थित नियाग्रा जलप्रपात विश्वविख्यात है। दो हिस्सों में बंटे इस जलप्रपात का एक हिस्सा अमेरिका में है और दूसरा कनाडा में। अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा का फैसला भी यही करता है।

कैलिफोर्निया का रिबन जलप्रपात एक ही धारा में गिरने वाला सबसे ऊँचा जलप्रपात है। इसकी पतली धारा 1600 फुट की ऊँचाई से नदी में गिरती है।

अमेरिका में टेनेसी में सुरंगनुमा जलप्रपात है जिसे रूबी लैम्बर्ट के नाम से जाना जाता है। यह काफी गहरा है। इसकी ऊँचाई 145 फीट के लगभग है।

दुनिया के अनूठे झरनों में से एक है रोमानिया का बिगर वॉटरफॉल। दलदल और चट्टान से घिरे इस जलप्रपात की जगह और आकार देखते ही बनता है।

आइसलैंड में फॉग वॉटरफॉल भी काफी मनोरम है। चट्टानों के बीच में बहने वाले इस जलप्रपात के दृश्य काफी अविस्मरणीय है।

कैलिफोर्निया के हॉर्सटेल फॉग रंग बदलता है। जी हाँ, 1500 फीट से अधिक ऊँचाई से गिरने वाले इस झरने में फरवरी के अंत में रात होते ही यह लाल रंग का हो जाता है।

कनाडा का कैमरॉन फॉल भी मौसम के अनुसार रंग बदलता है। अलबर्टा में स्थित इस जलप्रपात का रंग जून में गुलाबी हो जाता है।

तुर्की का पामुक्केल वॉटरफॉल 525 फीट ऊँचा है। इसे रूई का महल भी कहा जाता है। यह भी किसी अजूबे से कम नहीं है।

अंटार्कटिका का ब्लडफॉल में बहता तो पानी ही है लेकिन उसका रंग खून की भांति लाल होता है। यह ड्राई वेली में स्थित है।

ऑस्ट्रेलिया का हॉरिजोन्टल फॉल्स पहाड़ों के बीच स्थित है। पहाड़ों के बीच बने इस जलप्रपात का बहाव काफी तेज है।

भारत का जर्सोपा जलप्रपात एशिया का सबसे लम्बा जलप्रपात है।

भारत के अधिकांश जलप्रपात दक्षिण भारत में पाए जाते हैं। इनमें से कुछ तो 9–10 मीटर ऊँचे हैं। महाराष्ट्र और कर्नाटक की सीमा पर शरावती नदी पर जोग प्रपात है, जो चार छोटे प्रपातों से मिलकर बना है। इसका जल 250 मीटर भी ऊँचाई से गिरकर बड़ा सुन्दर दृश्य उपस्थित रहता है।

शिवासमुद्रम प्रपात कावेरी नदी पर है जो 100 मीटर की ऊँचाई से जल गिराता है। इसी प्रकार नीलगिरि की पहाड़ियों में पायकारा प्रपात का भी उल्लेख है। इन दोनों जलप्रपातों का इस्तेमाल जल विद्युत शक्ति के लिए किया जाता है।

बेलगामी जिले में गोकक नदी पर गोकक प्रपात 54 मीटर ऊँचा और महाबलेश्वर के निकट येन्ना प्रपात 183 मीटर ऊँचा है।

दक्षिण टोंस नदी विंध्याचल के पठार को पार करके निकलती है, जो कई प्रपात बनाती है जिनमें मुख्य बिहार प्रपात है जो बाढ़ के समय 180 मीटर चौड़ा और 131 मीटर ऊँचा हो जाता है।

चंबल नदी में अनेक जलप्रपात मिलते हैं। कोटा के निकट चूलिया प्रपात 18 मीटर ऊँचा है।

नर्मदा नदी के जबलपुर के निकट धुआंधार प्रपात हालांकि मात्र 9 मीटर ऊँचा है लेकिन बड़ा सुन्दर दृश्य उपस्थित करता है।

एक चीज

★ लेने के लिए कोई चीज़ है तो ज्ञान।
★ करने के लिए कोई चीज़ है तो सेवा।
★ रखने के लिए कोई चीज़ है तो इज्जत।
★ त्यागने के लिए कोई चीज़ है तो ईर्ष्या।
★ पीने के लिए कोई चीज़ है तो क्रोध।
★ जीतने के लिए कोई चीज़ है तो प्रेम।

– प्रस्तुति : नीरज कुमार (रोहाना कलां)

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन

बचत और गति का प्रतीक

गिलहरी

नटखट, चंचल और निरंतर गतिशील, शरारती बच्चे की तरह हरदम कूदती-फांदती गिलहरी गति का प्रतीक है। वैसे भविष्य के लिए भोजन सुरक्षित रखने के उसके स्वभाव ने उसे बचत के प्रतीक-चिन्ह के रूप में भी मान्यता की है। आज कई बचत संगठनों का मोनोग्राम यह गिलहरी ही है।

गिलहरी जीव-विज्ञान की दृष्टि से कृन्तक जीव-समूह के अन्तर्गत आती है। चूहे, खरगोश की तरह इस समूह की लगभग एक हजार प्रजातियां पाई जाती हैं। गिलहरी उनमें से एक है। गिलहरियां कई प्रकार की होती हैं, जैसे जमीन पर रहने वाली गिलहरी, उड़ने वाली और पेड़ों पर रहने वाली आदि। गिलहरी को पंजाबी में 'काटो', बंगाली में 'काठ बिलाड़ी', मराठी में 'खदीखद', तमिल में 'अन्ना पिल्ली' और अंग्रेजी में 'स्क्वैरल' कहा जाता है।

यह प्राणी देखने में सुन्दर, आकर्षक तथा स्वभाव से चंचल होता है। विभिन्न प्रजातियों के अनुसार गिलहरी की लम्बाई तीन इंच से लेकर डेढ़ फीट तक होती है। सामान्यत: गिलहरी के शरीर से उसकी पूंछ लगभग डेढ़ गुना अधिक लम्बी होती है। यह बहुत तेज रफ्तार से दौड़ती है। लेकिन इसकी दौड़ कभी अन्धाधुंध और लक्ष्यहीन नहीं होती। दौड़ते वक्त कुछ समय बाद रूक-रूककर स्थिति का आकलन करते हुए आगे बढ़ना गिलहरी का स्वभाव है। नीचे से ऊपर अथवा ऊपर से नीचे हर तरह की दौड़ लगाने, पेड़ की ऊबड़-खाबड़ और मोटी-पतली डालियों पर बेहिचक पूरे संतुलन के साथ दौड़ सकने की इनमें अद्‌भुत क्षमता होती है।

गिलहरी की अग्र-दंत पंक्ति काफी मजबूत और नुकीली होती है। अपने तीखे दांतों से यह लकड़ी, अखरोट, बादाम, चमड़ा आदि सख्त वस्तुओं को भी बड़ी आसानी से कुतर लेती है। मजेदार बात यह है कि गिलहरी को अपने दांत टूटने या घिसने की कतई चिंता नहीं होती क्योंकि इसके दांत जिंदगीभर उगते रहते हैं। काश! यह सुविधा इन्सान को उपलब्ध हो पाती। अपने दांतों को सामान्य अवस्था में बनाये रखने के लिए गिलहरी को हरदम कुछ-न-कुछ कुतरते रहना पड़ता है ताकि उसके दांत घिसते रहें।

गिलहरी के भोजन का अंदाज सचमुच बहुत निराला होता है। यह अपने पिछले पैरों पर आराम से बैठ जाती है और अगले पैरों को हाथों की तरह इस्तेमाल करते हुए अपने जबड़ों को तेजी से चलाकर भोजन को चबाती है। गिलहरी अपने नवजात बच्चों की देखभाल बहुत ही सतर्कता के साथ करती है। जन्म के समय बच्चे के शरीर पर बाल नहीं होते और उनकी आंखें भी बंद रहती हैं। बच्चों के स्वावलम्बी होने तक गिलहरी उनके लिए भोजन जुटाने से लेकर, उन्हें चलना सिखाने जैसे कार्य भी करती है।

गिलहरी का मुख्य भोजन फल, मूंगफली, फूल, पत्तियां, कोंपलें, पेड़ों की छाल, छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े, पक्षियों के अंडे जैसी चीजें शामिल हैं। वैसे यह सर्वभक्षी जीव सब कुछ खा लेता है।

वैसे तो यह आजाद प्राणी है। लेकिन जंगली गिलहरी को पालतू बनाया जा सकता है। लम्बे समय तक उसका विश्वास हासिल करने के बाद वह पालतू बन सकती है।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

नहीं, नहीं आज मैं कोई शरारत नहीं करूँगी। चिंटू को भी नहीं सताऊँगी। वैसे भी, चिंटू तो आ ही नहीं रहा हमारे साथ।
मोंटू भी नही है। चलो हम दोनों ही चलते हैं।
मौली, ध्यान से सुनो, कुछ ऐसी आवाज़ें आ रही हैं जैसे कोई मुसीबत में है।

उधर चलकर देखते हैं कुछ न कुछ गड़बड़ तो है। अरे, वो देखो। कबूतर जाल में फँसे हैं।
अरे, अब क्या करेंगे, आज तो चिंटू, मोंटू भी नहीं हैं। वो तो इस जाल को मिनटों में काट देते।
किट्टी, मैं शिकारी का ध्यान रखती हूँ, तुम जल्दी से चिंटू को ले आओ जाल काटने के लिए।

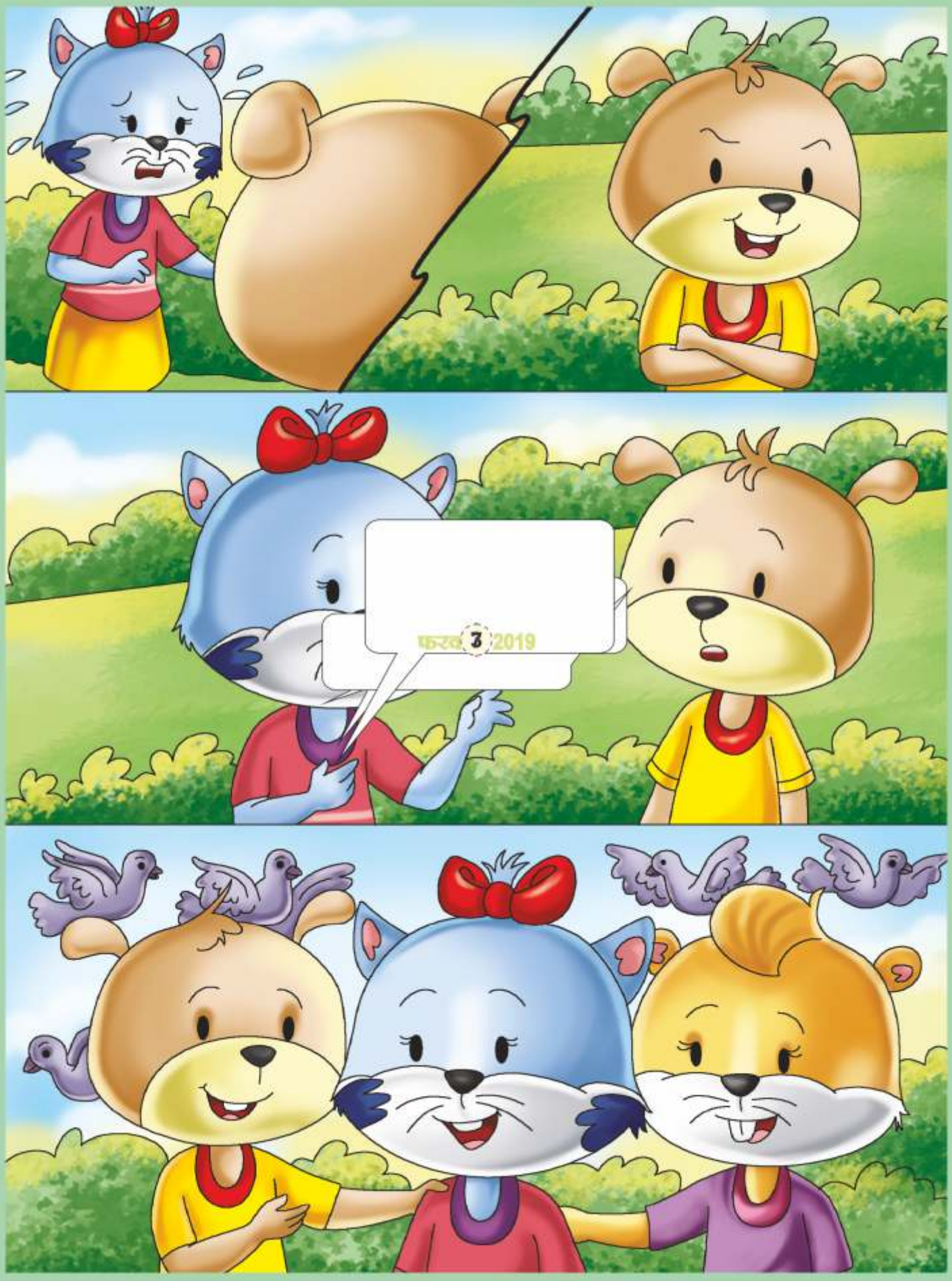
फरवरी 3 2019

हर हल ईश्वर के पास

थॉमस एडिसन फोनोग्राफ बनाने के काम में व्यस्त थे। इसी बीच भारी-हल्के स्वरों से सम्बन्धित मशीन से निकलने वाली एक समस्या उनके सामने खड़ी हो गई। उन्होंने यह गुत्थी सुलझाने का काम अपने एक सहायक के सुपुर्द कर दिया।

दो साल तक उस पर काम करने के बाद वह सहायक एडिसन के पास आया और बोला– मिस्टर एडिसन, मैंने आपके हजारों डॉलर और अपने जीवन के दो साल इस काम में खपा दिए और निकला कुछ नहीं। अगर कोई और होता तो मुझे अब तक निकाल देता। मैं इस्तीफा देना चाहता हूँ। इतना कहकर उसने इस्तीफे की दरखास्त एडिसन की मेज पर रख दी और विनम्रता से बोला– कृपया मेरा इस्तीफा स्वीकार कीजिए।

एडिसन ने एक क्षण भी सोचे बगैर इस्तीफे का कागज फाड़ दिया और बोले– मैं तुम्हारा इस्तीफा नामंजूर करता हूँ।

क्षणभर रूककर एडिसन ने कहा– जॉर्ज, मेरा विश्वास है कि हर समस्या, जो ईश्वर ने हमें दी है उसका हल उसके पास है। हम भले ही उसे न निकाल सकें, मगर किसी न किसी दिन कोई न कोई उसे जरूर निकालेगा। वापस जाओ और कुछ अर्से तक और मेहनत करो।

करामात नाचीज़ है

प्रसिद्ध धर्मोपदेशक और विद्वान सन्त हसन बसरी एक बार महिला सन्त रबिया से मिलने गए। उस समय उनका निवास स्थान नदी तट पर था। जब नमाज का समय हुआ तो हसन ने अपना मुसल्ला (नमाज की चटाई) दरिया पर फेंका और रबिया से नमाज पढ़ने की विनती की। तब रबिया ने अपना मुसल्ला ऊपर हवा में फेंका और बोली, ''हम नीचे नहीं, ऊपर पढ़ेंगे, जिससे हमें कोई देख न पाए।''

हसन को यह देख आश्चर्य हुआ कि उनका मुसल्ला पानी पर स्थिर रह गया था जबकि रबिया का ऊपर आकाश में फैल गया था। इससे हसन को दु:ख हुआ कि काश उनमें भी ऐसी शक्ति होती तो वो भी अपना मुसल्ला आकाश में फैला देते। रबिया से उनका दु:ख छिपा न रहा। वे बोली– देखो हसन, तुमने जो किया वह एक मछली भी कर सकती है और हमने जो किया वह एक मक्खी भी कर सकती है। यह हम दोनों को ही नहीं करना चाहिए। जो काम करना चाहिए, वह न तो तुमने किया है और न हमने। वह काम इन दोनों से अलग है और वह है– लोगों को ऊँचा उठाने का।

बात हसन के ध्यान में आ गई कि साधु-सन्तों को करतब या चमत्कार के पीछे नहीं भागना चाहिए, बल्कि ज्यादा से ज्यादा लोगों का झुकाव अध्यात्म की ओर लगाना चाहिए।

हँसती दुनिया फरवरी 2019

कहानी : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

नन्हा बरस गया

नन्हा बादल बहुत खुश था। वह माँ से बोला– "माँ! मैं खेलने जा रहा हूँ" यह कहते ही वह दौड़ पड़ा। उसके पीछे-पीछे उसकी माँ व अन्य साथी भी चले आ रहे थे।

नन्हें बादल ने नीचे देखा। वहाँ एक किसान बड़ी आस से बादल की ओर देख रहा था। वह बोला– "ओ नन्हें बादल! यहाँ बरस जाओ। मेरा खेत गीला हो जाएगा। इससे सूख रही फसल हरी हो जाएगी।"

इस पर नन्हें ने जवाब दिया– "किसान काका! अभी मैं खेलने जा रहा हूँ। आकर बरस जाऊंगा।" कहते हुए नन्हा बादल आगे चल दिया।

दूर एक वीरान पहाड़ था। जिस पर एक भी पौधा नहीं था। वह बोला– "अरे नन्हें बादल! मुझ पर बरस जाओ। इन्सान ने पेड़ काट-काटकर मेरा पूरा पहाड़ उजाड़ कर दिया है। यदि तुम बरस जाओगे तो मेरे ऊपर उगे पेड़ के ठूंठ हरे हो जाएंगे।"

नन्हें को खेलने जाना था। वह बोला– "पहाड़जी! मुझे अभी खेलने जाना है। जब खेलकर आऊंगा तब बरस जाऊंगा।" कहकर वह आगे बढ़ गया।

कुछ दूर पर पीहूं मोर खड़ा नाचने की सोच रहा था। वह नन्हें बादल को देखकर बोला– ''अरे नन्हें बादल! यदि तुम मेरे साथ नाचना चाहो तो नाच सकते हो। तुम्हें देख कर मुझे नाचने की इच्छा हो रही है।''

नन्हें को खेल खेलना था। वह पीहू से बोला– ''मोर भाई! मुझे नाचना नहीं, खेलना है। यदि तुम मेरे साथ खेलना चाहो तो खेल सकते हो।''

पीहू ने कहा– ''नन्हें! मुझे खेलना नहीं, नाचना आता है।''

इस पर बादल बोला– ''कोई बात नहीं मोर भाई, मैं थोड़ा खेलकर आता हूँ फिर तुम्हारे साथ नाचूंगा।'' कहते हुए नन्हा बादल आगे बढ़ गया।

नदी किनारे कुछ बच्चे खेल रहे थे। वे बादल की ओर देखकर बोले– ''देखो भाई! वह नन्हा बादल आ रहा है। यदि वह हमारे साथ खेलने लगे तो कितना मजा आ जाए।''

नन्हा यह सुनकर खुश हो गया। ''हाँ, हाँ, मैं भी तुम्हारे साथ खेलना चाहता हूँ।'' कहते हुए नन्हा बच्चों के पास आ गया।

बच्चे बारी-बारी से कूद-कूदकर नन्हें को पकड़ने की कोशिश करने लगे। नन्हा कभी उनके पास आता। कभी दूर चला जाता। उसे बच्चों के साथ खेलने में मजा आ रहा था।

एक बच्चा बादल को मुट्ठी में लेकर कह रहा था– ''अरे देखो! मेरे हाथ में बादल आ गया।''

इस पर दूसरा बोला– ''बता कहाँ है?''

पहले ने मुट्ठी खोल दी। मगर मुट्ठी में कुछ नहीं था। इस पर दूसरे ने कहा– ''कहाँ है बादल?''

''वह देख मुट्ठी में से निकलकर वह ऊपर उड़ रहा है।'' यह सुन कर बादल मुस्कुरा दिया।

''देख देख! बादल हँस रहा है।'' एक लड़का कह रहा था।

यह सुनकर नन्हा बादल मुस्कुरा दिया। उसके बीच में मुंह की आकृति बन गई। होंठ गोल हो गए थे। वह मुस्करा कर बोला– ''चलो! हम सब खेलते हैं। हमारे साथ-साथ ये बच्चे भी खेलेंगे।''

यह सुन कर सभी बादल उमड़-घुमड़ कर नन्हें के साथ-साथ आ गए। वहाँ पर बादल छाने से अंधेरा हो गया। पहले बादलों ने धीरे-धीरे बरसना शुरू कर दिया। फिर उमड़-घुमड़ कर तेज बरसने लगे। यह देखकर बच्चे जोर-जोर से नाचने और गाने लगे, ''बरखा रानी आना तू। / रिमझिम पानी बरसाना तू। / मम्मी मेरी आएगी / मुझे पकड़ ले जाएगी।''

यह सुनकर नन्हा भी नाचने लगा। दूर खड़ा मोर भी पीहू-पीहू करके उसके साथ अपना नृत्य करने लगा। उसे नाचता देखकर मोर के साथ बादल भी नाचने लगा।

यह देख कर सभी बादल वहाँ आ गए।

कुछ बादल पहाड़ पर बरसने लगे। कुछ किसान के खेत पर बरसने लगे। नन्हें को यह देख कर मजा आ गया। वह बच्चों को छोड़कर पहाड़ की ओर भागा, ''पहाड़ भाई! अब तो मैं तुम पर बरस रहा हूँ। तुम खुलकर नाच गा सकते हो।''

यह सुनकर पहाड़ भी झूम-झूमकर नाचने-गाने लगा।

नन्हा आगे बढ़ गया। वह किसान के पास पहुँचा।

"किसान भाई! तैयार हो जाओ। मैं बरसने आ गया।" कहते हुए नन्हा किसान के खेत में बरसने लगा।

किसान खुश हो गया। उसकी फसल सूखने से बच गई थी। उसने मुस्कुराते हुए कहा– "तुम खेलकर आ गए। बहुत अच्छा किया। धन्यवाद।"

इस पर नन्हें ने कहा– "कोई बात नहीं किसान काका। आज तो खेलने में मजा आ गया।"

"क्यों?" किसान ने पूछा तो नन्हा बोला– "माँ कहती है कि हम बहुत पहले पेड़-पौधों के साथ बहुत छूप्पनछैय्या खेल कर बरसते थे। मगर, अब पेड़-पौधे इतने ज्यादा नहीं रहे इसलिए खेलने में मजा नहीं आता है।"

यह कहकर नन्हा उदास हो गया। इस पर किसान बोला– "चिंता क्यों करते हो नन्हें बादल! मैं अपने खेत और खाली पड़ी जमीन पर बहुत सारे पेड़-पौधे उगाकर इसे हरा-भरा कर दूँगा।"

"ओह! तब तो माँ की तरह मैं भी पेड़-पौधों के साथ खेलकर मजा लूंगा।" कहते हुए नन्हा बादल जोर से बरसने लगा और किसान अपने खेत को संभालने लगा। ताकि खेत का पानी बहकर बाहर न जा सके।

जानकारी (पक्षी जगत) : दीपांशु जैन

पेंगुइन का अनोखा संसार

छोटे–छोटे पंख एक–दूसरे पर इस तरह चढ़े हुए, मानो पंखों की खपरैल बनाकर पीठ पर टिका दी हो। छोटे लेकिन मोटे पैरों पर अपने भारी शरीर को संभाले, चोंच थोड़ी झुकाकर जब बर्फ पर चलता है, तो ऐसा लगता है जैसे कोई बौना रंग–बिरंगा कपड़ा लपेटे चला जा रहा हो।

यह पेंगुइन पक्षी है, दक्षिणी ध्रुव प्रदेश का निवासी। देखने में जितना अजीब, उतनी ही विचित्र आदतें हैं इसकी। रहता है पानी में, अंडे देता है सूखे में। अंडे देने के लिए एकदम एकांत, शांत वातावरण चाहिए, जहाँ किसी दुश्मन के आने की आशंका न हो। ऐसे स्थान की तलाश में इसे मीलों चलना पड़े, तो वह भी गवारा। यहाँ तक कि दक्षिणी ध्रुव का यह पक्षी भूमध्य रेखा के नजदीक दक्षिण अफ्रीका और दक्षिण अमरीका के किनारे के टापुओं पर भी देखा जाता है। इतनी दूर ये कैसे चले आते हैं, जानते हैं आप?

ध्रुव प्रदेश की ओर से उत्तर की ओर ठंडी जल धाराएं चलती हैं। ये ठंडी जल धाराएं पेंगुइन को वहाँ तक पहुँचने में मदद करती हैं।

आप सोचते होंगें कि जब यह इतनी दूर चला जाता है, तो उड़कर जाता होगा। नहीं, अपने छोटे पंखों के कारण यह कतई नहीं उड़ पाता। हाँ, तैरता बहुत तेज है। जब यह तैरता है, तो ऐसा लगता है, मानो पानी पर उड़ रहा हो। इसके जालदार पैर तैरने में पतवार का काम करते हैं और वाटरप्रूफ पंखों की खपरैल तो मानो इसके लिए वरदान ही है। सूखी धरती और बर्फीले मार्गों पर यह बड़े पेड़ पर भी चढ़ जाता है। जब यह बतख की तरह चलता है, तो इसकी चाल बड़ी लुभावनी लगती है।

इसका भोजन है छोटी–छोटी मछलियां और दूसरे जल–जंतु। भोजन के मामलों में यह पूरा बगुला भगत है। पानी से इसे इतना प्यार है कि अगर अंडे देने और बच्चे सेने का सवाल न हो तो पानी से बाहर न निकले। पेंगुइन पक्षी के लिए यही सबसे अधिक जीवट का काम है।

आप जानते हैं कि दक्षिणी ध्रुव पर छह महीने (सर्दियों में) बर्फ जमी रहती है और उन दिनों सूरज के दर्शन नहीं होते और जब गर्मियों में सूरज निकलता है, तो लगातार छह महीने तक अस्त नहीं होता। और यही मौसम होता है, जब पेंगुइन पक्षियों को अंडे देने के लिए घोंसला बनाना पड़ता है।

लेकिन घोंसला बनाये कहाँ? बर्फ में? और अगर बर्फ पिघल गई तो? इसलिए इसे कोई ऐसा स्थान तलाशना पड़ता है, जहाँ की बर्फ पिघल जाने से पत्थर निकल आयें हों और आस–पास की बर्फ पिघल जाने से अंडे बह जाने का खतरा न हो। स्वाभाविक है कि ऐसी जगह उसे कुछ ऊंचाई पर ही मिलेगी। इस कारण गर्मियां शुरू होते ही ये ऊंचाई की ओर चल पड़ते हैं।

मादा पेंगुइन वर्ष में एक बार सिर्फ दो अंडे देती है और अंडे देने के बाद वह आराम करने के लिए फिर पानी में चली जाती है। तब अंडों और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी अकेले नर को उठानी पड़ती है। मादा को लौटने में करीब चार हफ्ते लग जाते हैं। इस बीच नर कुछ खाता नहीं

है। मादा के लौटने पर नर आराम करने चला जाता है।

उनके बच्चों का भोजन भी विचित्र होता है। पेंगुइन पक्षी पानी में जाकर भर पेट मछलियां खाकर घोंसले में लौटता है, जहाँ बच्चे उसका इंतजार कर रहे होते हैं। घोंसले में आकर यह मछलियां बच्चों के सामने उगल देता है, समूची नहीं, करीब–करीब पची हुई, क्योंकि लौटने में इतना समय लग जाता है कि मछलियां पच चुकी होती हैं। मां–बाप के पेट में पचाया हुआ यह भोजन बच्चे बड़े चाव से खाते हैं। उनके लिए यह पौष्टिक भी होता है।

इतना ही नहीं, पेंगुइन पक्षियों की समाज–व्यवस्था भी बड़ी अच्छी होती है। पेंगुइन के जोड़े एकांत में घोंसला जरूर बनाते हैं, किंतु एक स्थान पर एक ही जोड़ा हो, ऐसी बात कभी नहीं होती। भला पेंगुइन को पेंगुइन से क्या डर! अंडे देने के मौसम में वे बाकायदा बस्ती बनाकर रहते हैं। और जब मां–बाप भोजन की तलाश में दूर चले जाते हैं, तो बड़े बच्चे छोटों की देखभाल करते हैं। सब मिल–जुलकर रहते हैं।

अंडे देने के मौसम के बाद यानी सर्दियों में पेंगुइन फिर पानी में चले जाते हैं।

यह तो हुई साधारण पेंगुइनों की बात। लेकिन राजा–रानी के नक्शे कुछ दूसरे ही होते हैं। इस जाति के पेंगुइन आकार में कुछ बड़े होते हैं और इन्हें अंडे देने से लेकर बच्चों को ताकतवर बनाने तक ज्यादा समय लगता है। इसलिए अगर गर्मियों के शुरू में अंडे दें, जैसा कि साधारण पेंगुइन करते हैं, तो सर्दियां शुरू होने तक बच्चे कमजोर ही रह जायें और मर जायें। इसलिए ये गर्मियां शुरू होने से पहले ही अंडे देते हैं। उन दिनों ध्रुव प्रदेश पर रात होती है इसलिए अंडे देने और सेने का काम अंधेरे में ही शुरू करना होता है। ठंड से बचाने के लिए मादा अपने पैरों या पंखों से अंडों को छिपाये रखती है।

पढ़ो और हँसो

पप्पू : (अंकल से) अंकल, माँ के भाई को मामा बोलने का सिलसिला कैसे शुरू हुआ?

अंकल : एक दिन माँ ने अपने भाई के पास अपना बच्चा छोड़कर किसी काम से बाहर चली गई, कुछ देर बाद बच्चा मा मा कहकर रोने लगा। बस, तब से ...

– शमीम उस्मानी (मालाड, मुंबई)

एक व्यक्ति अपने दोस्त से बोला– कोई ऐसी चीज बताओ जो ब्रेकफास्ट में नहीं खायी जा सकती।

दोस्त : 'एक' क्या मैं 'दो' बताता हूँ।

व्यक्ति : ठीक है, दो बताओ।

दोस्त : 'लंच' और 'डिनर'।

डायरेक्टर ने एक्टर से कहा– सिर्फ मुस्कुराइए नहीं, दाँत भी बाहर निकालिए।

एक्टर ने फौरन अपने नकली दाँत बाहर निकाल दिए।

बेटी को माँ ने समझाया– 'सास माँ' की बात पर कभी 'न' मत कहना। वह जो भी कहे हमेशा हाँ जी ही कहना।

विनय : (नौकर से) मैं एक घंटे से घंटी बजा रहा हूँ। तुम्हें सुनाई नहीं दिया?

नौकर : आप मालिक हो आप एक घंटा क्या पूरा दिन बजा सकते हो।

सोनू : (माँ से) माँ मैं अपनी कक्षा में तृतीय स्थान पर आया हूँ।

माँ : (खुश होकर) अच्छा यह तो बताओ तुम्हारी कक्षा में कितने बच्चे थे?

सोनू : तीन।

अध्यापक : (छात्र से) बताओ स्वर और व्यंजन में क्या अन्तर है?

छात्र : सर, स्वर तो मुँह से बाहर निकालते हैं और व्यंजन मुँह के अन्दर लेते हैं।

शिक्षिका : राहुल बताओ, हाथी की क्या पहचान होती है?

सुनीता : (सपना से) क्या बताऊँ, मेरा मुन्ना तो हरदम अंगूठा ही चूसता रहता है। कोई उपाय बताओ?

सपना : तुम ऐसा करो। अपने मुन्ने को एक ढीली निक्कर पहना दो। दिनभर वह अपनी निक्कर को ही सम्भालता रहेगा और अंगूठा चूसने की आदत अपने-आप छूट जायेगी।

कवि : आपको मेरी कविता पसन्द आई?

श्रोता : मुझे उसका अन्त सुन्दर लगा।

कवि : किस जगह?

श्रोता : जब आपने कहा कि कविता समाप्त हुई।

एक नौकर ने अपने कंजूस मालिक से कहा– 'साहब' रात को मैंने ख्वाब देखा कि आपने मुझे एक हजार रुपये एडवांस दिये हैं।

मालिक ने कहा– ठीक है, अगले महीने तुम्हारी तनख्वाह से काट लिए जाएंगे।

एक दिन बंता बाजार गया। रास्तें में एक चोर आकर उसका मोबाइल छीनकर भाग गया। पहले

मरीज : (डाक्टर से) डॉ. साहब आपने सिर, बदन और जोड़ों में होने वाला दर्द बिल्कुल ठीक कर दिया। अब एक तकलीफ रह गई है कि मुझे पसीना नहीं आता।

डाक्टर : चिन्ता मत करो, बिल देखकर आपकी यह तकलीफ भी दूर हो जाएगी।

विमान चला रहा पायलट जोर-जोर से हँसने लगा और जहाज डगमगाने लगा तो यात्रियों ने उससे पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा है?

पायलट बोला– मैं यह सोचकर हँस रहा हूँ कि जब पागलखाने वालों को पता लगेगा कि मैं भाग गया हूँ तो उनकी हालत क्या होगी?

मम्मी : सुशील, आज जो पकौड़े हमने खाए हैं उनके बारे में अपने पापा को न बताना।

सुशील : मम्मी, नहीं बताऊँगा। अब देखो न मैं और पापा कई बार बाजार जाकर आइसक्रीम खाते हैं। क्या मैंने कभी इस

– प्रस्तुती : चाँद मोहम्मद घोसी

आप कितने सूक्ष्मदर्शी हैं?

ध्यान से देखकर एक (1) नम्बर चूहे का हमशक्ल जुड़वां भाई बताइए।

उत्तर :– नम्बर 4 चूहा जुड़वां भाई है।

बताओ तो जानें?

यहाँ चित्रित परछाईयां कौन से प्राणियों की हैं? ध्यान से देखकर इनके नाम बताइए।

उत्तर :– परछाई नम्बर 1. कछुआ, 2. गिद्ध, 3. तितली,4. हिरण, 5. मगरमच्छ व 6. गैंडे की है।

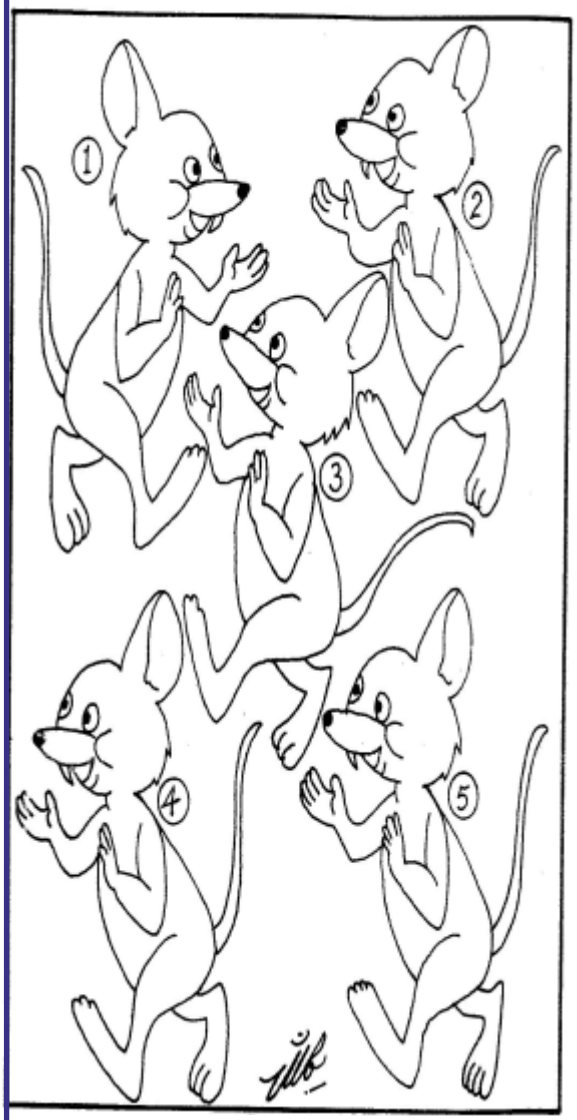

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

शहद की प्याली

तोता फुदका डाली डाली,
कोयल कुहूकी काली काली।
कौआ कांव कांव चिल्लाया,
धरती ने हरी चुनर डाली।।

कल कल करता बहता पानी,
नदियों की है अजब कहानी।
भौरों ने डाला है डेरा,
तितली हो गई है अब मतवाली।।

डाली पर अब फूल खिले,
खुशबू हवा अब गले मिले।
मधुमक्खी के छत्ते लटके,
शहद भरा है प्याली प्याली।।

चीं चीं करके चिड़िया आई,
खेत में सरसों फूली भाई।
बसंत ऋतु ने पहने गहने,
धरती माँ करती रखवाली।।

फूलों की डाली

लचक रही फूलों की डाली,
पानी सींच रहा है माली।
तितली भौरे झूम रहे हैं,
छलक रही चंदा की थाली।।

डाली के फूलों को देखो,
तोड़ो नहीं न इनको फेंको।
हँसना इनसे सीखो बच्चो,
भरा हुआ मन नहीं है खाली।।

कितने सुंदर प्यारे फूल,
चारों तरफ उनके शूल।
लाल गुलाबी सफेद पीले,
कलियों की उमर है बाली।।

प्रेम से इनसे मिलना सीखो,
बच्चो इनसे खिलना सीखो।
सुगंध उड़े तन मन भीगे,
महक रही सौरभ की प्याली।।

दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **मुक्ति सोनी** 12 वर्ष
आलमपुरा, नमक गोदाम के पास,
स्टेशन रोड, महोबा (उ.प्र.)

2 **सिमरन डोडानी** 9 वर्ष
झूलेलाल मंदिर के पीछे,
भाटापारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)

3 **अनंत शाक्य** 10 वर्ष
308, महावीर नगर,
भरथना, जिला : इटावा (उ.प्र.)

4 **कृष्णा भाषणी** 11 वर्ष
लिम्बच माता मंदिर, शेरा,
भागोल, गोधरा (गुजरात)

5 **प्रियंका भाषणी** 14 वर्ष
लिम्बच माता मंदिर, शेरा,
भागोल, गोधरा (गुजरात)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सोनाली पूनिया (बजरंगपुरा, जयपुर), प्रेमप्रकाश गढ़वाल (सरदार शहर), साधिक मल्होत्रा (रथखाना, बीकानेर), ध्रुव (रामनगर, वर्धा), गुरुप्रीति (नांगलोई, दिल्ली), रोनित साधवानी (उल्हास नगर), आराधना रावत (भोगपुर), ऐश्वर्या (उपासना इंक्लेव, देहरादून), नेहा शर्मा (बकरोल, आनंद), स्वर्णजीत राणा (सतनामपुरा, फगवाड़ा), तुषार कर्दम (कोसी कलां), कनिष्का (नरोदा, अहमदाबाद) वंशिका ठाकुर (महांकाल, कांगड़ा), वान्या बोथरा (हड़सन लेन, दिल्ली), अमित (निरंकारी कॉम्प्लेक्स, दिल्ली), सुमति वर्मा (गुलमोहर विहार, कानपुर), रघुराज सूर्यवंशी (डांगोली बांगर), वशंम, भारती, राकेश रंजन, आशीष, समर्पिता जयसिंघानी, संदीप, सिमरन, तुषार, गौरव, खुशी, रोशनी, प्रीति, अभिषेक, अनीशा, वंशिका, नम्रता, साहिल, मुस्कान, खुशी (रायपुर)।

फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 फरवरी तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

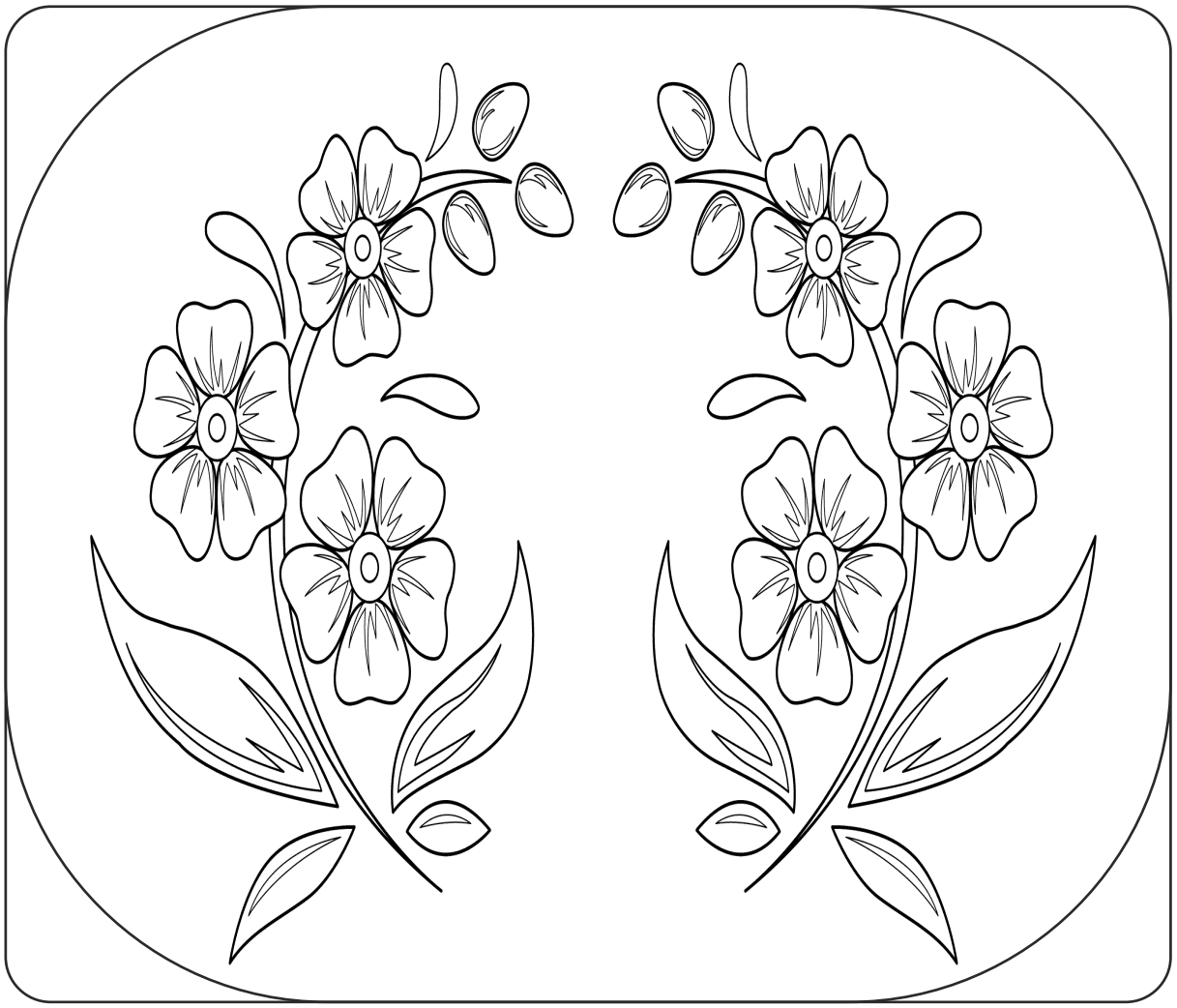

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मैं हँसती दुनिया का हर महीने बेसब्री से इन्तजार करता हूँ। मैं और मेरे घर वाले इसे बड़े चाव से पढ़ते हैं। मैं और मेरे परिवार वाले इसके बारे में तो यह कहते हैं कि हँसती दुनिया बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है।

हँसती दुनिया पत्रिका हर महीने समय से आ जाती है। मुझे इसमें 'कभी न भूलो', 'पढ़ो और हँसो', कविताएं, कहानियां आदि पढ़ने में बहुत अच्छी लगीं।

मैं इसके बारे में कहना चाहता हूँ कि–

हँसती दुनिया पढ़ते और पढ़ाते जाओ।
जीवन में मुश्किलों के कांटों को हटाते जाओ।

– वैभव किशोर (डांगोली बांगर)

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका की शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्द्धक बातें बहुत अच्छा मार्गदर्शन करती हैं।

पत्रिका में 'सबसे पहले', 'अनमोल वचन' और 'पढ़ो और हँसो' मुझे बहुत प्रिय लगते हैं।

– रवित वधवा (श्रीगंगागनर)

हँसती दुनिया बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका ज्ञान की ज्योति है। बच्चों में भक्ति एवं देशभक्ति पैदा कर, ज्ञान-विज्ञान की जानकारी, कहानियां, कविताएं हर तरह से हँसती दुनिया पत्रिका ज्ञान का सागर है। **– पवन बत्तरा (पंचकूला)**

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका के द्वारा हमें आध्यात्मिक और सामाजिक जीवन जीने का सही ढंग सीखने को मिलता है। मैं हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी तथा पंजाबी पत्रिका का भी अध्ययन करती हूँ जिससे मुझे हर प्रकार की जानकारी मिलती है।

– सोनी निरंकारी (खलीलाबाद)

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेकों प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। हर प्रान्त की भाषा की पत्रिकाओं को बढ़ावा मिले और इनकी पाठक संख्या बढ़े इसकी जरूरत है। 'हँसती दुनिया'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी, अंग्रेजी तथा 'सन्त निरंकारी'– हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, नेपाली, उड़िया व 'एक नजर'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी लगातार प्रगति कर रही हैं। पाठक और ब्रांच स्तर पर इनके प्रोत्साहन की आवश्यकता है। वर्तमान में हँसती दुनिया, सन्त निरंकारी और एक नजर की चंदा राशि एक वर्ष के लिए 150 रुपये, तीन वर्ष के लिए 400 रुपये, पाँच वर्ष के लिए 700 रुपये तथा ग्यारह वर्ष के लिए 1500 रुपये हैं। कृपया आप अपनी पत्र-पत्रिकाओं की चंदा राशि जमा कराना सुनिश्चित कर लें।

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं यूं तो सभी सदस्यों को नियमित रूप से निश्चित तारीखों पर भेज दी जाती हैं। फिर भी किसी माह डाक विभाग या किसी अन्य कारण से पत्रिका न मिलने की स्थिति में कृपया पत्रिका विभाग दिल्ली को पत्र, फोन, E-Mail या 'व्हाट्सऐप' द्वारा नीचे दिए गए विवरण अनुसार सूचना दें–

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक,
बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

Phone : +91-11-47660200, Extn. 862
Fax : +91-11-47660300, 27608215,
Help Line : 47660360, 859,
WhatsApp : 9266629841,
Email : patrika@nirankari.org

– प्रभारी पत्रिका
सं.नि.मं., दिल्ली-110009

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under RNI No. 25672/73 :

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया	सन्त निरंकारी	एक नज़र
(चार भाषाओं में)	(ग्यारह भाषाओं में)	(तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें
पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009
Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)